प्राक्कथन

संसार में प्रत्येक प्राणी को यह जानना अति आवश्यक है कि मैं क्या हूं, मेरी दुःखित सुखित अवस्थाओं का क्या कारण है जिन वस्तुओं को आज अपना मानते हैं उनका अन्त वियोग होता है इसका प्रधान कारण क्या है और किसे कहते हैं अर्थात् क्या वस्तु है पुण्य पाप के विषय क्या हैं धर्म के नियम कितने हैं आदि बातों को समझकर अनन्तर उन नियमों का पालन करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है यह न्याय सर्वमान्य है मानो इसी लिए तीर्थंकर भगवान् महावीर प्रभु ने मूल्यवान् उत्तराध्ययन के चतुर्थ अध्ययन की ११ वीं गाथा में कहा है—

जा ... दीहरीकम्मारु ... अधम्मविणीयस्स ।

... आलोचना यह आदि ... ॥

अर्थात् जो ज्ञानी और अज्ञानी शब्दों का नहीं जानता है वह साधु धर्म का यथार्थ धर्मादि का पालन नहीं कर सकता है। संसार के दुःखों से छूटने का उपाय ज्ञान प्राप्त करके ही हो सकता है ... साधु का धर्म के चारित्र का पालन करना जरूरी है। ज्ञान का सार चारित्र है। सम्यग् ज्ञान ... सम्यक् चारित्र इन्हीं में ... का पालन करने से सब कर्म नष्ट होते हैं और तब आत्मा शुद्ध सिद्ध स्वरूप पद का अधिकारी हो जाता है। विषय के ज्ञान का

जानने के लिए इस अपूर्व ग्रंथ का मनन करना जरूरी है। पहले भी जैनधर्म में पच्चीस बोल का थोकड़ा नवतत्त्व छत्तीस द्वार का थोकड़ा ये ग्रंथ प्राचीन अर्वाचीन मुनिराजों ने छपवाए हैं। लेकिन पृथक पृथक होने के कारण व आधुनिक स्पष्ट हिन्दी भाषा में प्रचलित न होने के कारण विद्यार्थियों को बहुत असुविधा मालूम होता था। इस कठिनाई को ध्यान में रखकर इस ग्रंथ में पच्चीस बोल का थोकड़ा नवतत्त्व छत्तीस द्वार दण्डक का चौबीस द्वार गुण स्थानों का वर्णन जैनधर्म के इस नियम और ऐसा विस्तार किया है कि जिससे छात्रों को व स्वाध्याय करने वालों को विशुद्ध ज्ञान प्राप्त हो और बहुत कठिन विषय भी सामने न आवे जिससे साधारण बुद्धि वालों का मन न उकताए और धर्म का मर्म समझ सकें। इस ग्रंथ का पूर्णतया संशोधन न हो सकने के कारण बहुत सी त्रुटियां भी रही होंगी अतः पाठक उन्हें सुधार कर पढ़ेंगे।

आत्मार्थी इच्छुक
जैनमुनि पुष्करेन्द्र

समर्पण

अपने पूज्य पतिदेव

स्वर्गीय लाला नरातामल जी जैन

की

पुण्य स्मृति में सादर भेंट !

कृपी देवी जैन

पच्चीस बोल का थोकड़ा

पच्चीस बोल का थोकड़ा

१ गति-चार

१ नरक गति २ तिर्यञ्च गति ३ मनुष्य गति ४ देव गति।

२ जाति-पाच

१ एकेन्द्रिय जाति २ द्वीन्द्रिय जाति ३ त्रीन्द्रिय जाति ४ चतुरिन्द्रिय जाति ५ पचेन्द्रिय जाति।

३ काय-छह

१ पृथिवीकाय २ अप्काय ३ तेजोकाय ४ वायुकाय ५ वनस्पति काय ६ और त्रसकाय।

४ इन्द्रिय-पाच

१ श्रुतेन्द्रिय २ चक्षुरिन्द्रिय ३ घ्राणेन्द्रिय ४ रसेन्द्रिय ५ स्पर्शेन्द्रिय।

५ पर्याप्त-छह

१ आहार पर्याप्त २ शरीर पर्याप्त ३ इन्द्रिय पर्याप्त ४ श्वासोश्वास पर्याप्त ५ भाषा पर्याप्त ६ मन पर्याप्त।

६ प्राण-दश

१ श्रुतेन्द्रिय बलप्राण २ चक्षुरिन्द्रिय बलप्राण ३ घ्राणेन्द्रियबलप्राण ४ रसेन्द्रिय बलप्राण ५ स्पर्शेन्द्रिय बल

यट्टि (अनिवृत्ति) बादर गुणस्थान १० सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान ११ उपशान्तमोहनीय गुणस्थान १२ क्षीणमोहनीय गुणस्थान १३ सयोगी केवली गुणस्थान १४ अयोगी केवली गुणस्थान ।

१२ पाच इन्द्रियों के विषय-तेईस

(श्रुतेन्द्रिय के विषय ३) १ जीव शब्द २ अजीव शब्द ३ मिश्र शब्द (चक्षुरिन्द्रिय के विषय ५) १ कृष्ण २ नील ३ पीत ४ रक्त ५ श्वेत (घ्राणेन्द्रिय के विषय २) १ सुगन्ध २ दुर्गन्ध (रसेन्द्रिय के विषय ५) १ कटुक २ कषाय ३ खट्टा ४ मृदु (मीठा) ५ तीक्ष्ण (स्पर्शेन्द्रिय के विषय ८) १ कर्कश २ मखमल ३ लघु ४ गुरु ५ उष्ण ६ शीत ७ रूक्ष ८ स्निग्ध ।

१३ मिथ्यात्व के भेद-दश

१ जीव को अजीव कहे तो मिथ्यात्व २ अजीव को जीव कहे तो मिथ्यात्व ३ धर्म को अधर्म कहे तो मिथ्यात्व ४ अधर्म को धर्म कहे तो मिथ्यात्व ५ साधु को असाधु कहे तो मिथ्यात्व ६ असाधु को साधु कहे तो मिथ्यात्व

७ मोक्ष के मार्ग को संसार का मार्ग कहे तो मिथ्यात्व ८ संसार के मार्ग को मोक्ष का मार्ग कहे तो मिथ्यात्व ९ कर्म रहित को कर्म सहित कहे तो मिथ्यात्व १० कर्म सहित को कर्म रहित कहे तो मिथ्यात्व ।

१४ तत्त्व—नौ

१ जीव तत्त्व २ अजीव तत्त्व ३ पुण्य तत्त्व ४ पाप तत्त्व ५ आश्रव तत्त्व ६ संवर तत्त्व ७ निर्जरा तत्त्व ८ बन्ध तत्त्व ९ मोक्ष तत्त्व ।

लघु नव तत्त्व के ११५ भेद

प्रथम जीव तत्त्व के १४ भेद—(एकेन्द्रिय के ४ भेद) १ सूक्ष्म २ बादर ३ पर्याप्त ४ अपर्याप्त (द्वीन्द्रिय के २ भेद) १ पर्याप्त २ अपर्याप्त (त्रीन्द्रिय के २ भेद) १ पर्याप्त २ अपर्याप्त (चतुरिन्द्रिय के २ भेद) १ पर्याप्त २ अपर्याप्त (पञ्चेन्द्रिय के ४ भेद) १ संज्ञि पञ्चेन्द्रिय २ असंज्ञि (असंज्ञि) पञ्चेन्द्रिय ३ पर्याप्त ४ अपर्याप्त ।

दूसरे अजीव तत्त्व के १४ भेद—(धर्मास्तिकाय के ३ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश (अधर्मास्तिकाय के ३ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश (आकाशास्तिकाय के ३ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश (काल का एक ही भेद) एक काल द्रव्य एवं १० (पुद्गल द्रव्य के ४ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश ४ परमाणु पुद्गल ।

तृतीय पुण्य तत्त्व के ९ भेद—१ अन्न पुण्य २ (पान)

पाणी पुण्य ३ लयण पुण्य ४ शयन पुण्य ५ वस्त्र पुण्य ६ मन पुण्य ७ वचन पुण्य ८ काय पुण्य ९ नमस्कार पुण्य (नम्रता)।

चतुर्थ पाप तत्त्व के १८ भेद–१ प्राणातिपात २ मृषावाद ३ अदत्तादान ४ मैथुन ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह (द्वेष) १३ अभ्याख्यान १४ पैशुन्य १५ परपरिवाद १६ रति अरति १७ माया मृषा १८ मिथ्या दर्शन शल्य।

पाचवें आश्रव तत्त्व के २० भेद–१ मिथ्यात्वाश्रव २ अव्रताश्रव ३ प्रमादाश्रव ४ कषायाश्रव ५ योगाश्रव ६ प्राणातिपाताश्रव ७ मृषावादाश्रव ८ अदत्तादानाश्रव ९ मैथुनाश्रव १० परिग्रहाश्रव ११ श्रुतेन्द्रियाश्रव १२ चक्षुरिन्द्रियाश्रव १३ घ्राणेन्द्रियाश्रव १४ रसनेन्द्रियाश्रव १५ स्पर्शेन्द्रियाश्रव (यह पांच इन्द्रिय वश न करने से आश्रव होते हैं।) १६ मनोयोगाश्रव १७ वचनयोगाश्रव १८ काययोगाश्रव १९ भण्डोपकरण वस्त्र पात्र अयत्ना से ग्रहण करे, अयत्ना से रक्खे तो आश्रव २० सूची कुशाग्रमात्र भी पदार्थ अयत्ना से लेवे तथा देवे तो आश्रव।

छठे संवर तत्त्व के २० भेद–१ सम्यक्त्व संवर २ व्रत संवर ३ अप्रमाद संवर ४ अकषाय संवर ५ अयोग संवर ६ प्राणातिपात विरमण संवर ७ मृषावाद विरमण संवर ८ अदत्तादान विरमण संवर ९ मैथुन विर-

१७–१९ तीनों विकलेन्द्रियों के ३ दण्डक २० पञ्चेन्द्रिय तिर्यचों का एक दण्डक २१ मनुष्य का एक दण्डक २२ व्यन्तर देवों का एक दण्डक २३ ज्योतिषी देवों का एक दण्डक २४ वैमानिक देवों का एक दण्डक।

१७ लेश्याएं–छः

१ कृष्ण लेश्या २ नील लेश्या ३ कापोत लेश्या ४ तेजो लेश्या ५ पद्म लेश्या ६ शुक्ल लेश्या।

१८ दृष्टि–तीन

१ सम्यग् दृष्टि २ मिथ्या दृष्टि ३ मिश्र दृष्टि।

१९ ध्यान–चार

१ आर्त्त ध्यान २ रौद्र ध्यान ३ धर्म ध्यान ४ शुक्ल ध्यान।

२० द्रव्य—छः

१ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय ५ जीवास्तिकाय ६ काल द्रव्य।

षट् द्रव्यों के तीस भेद

(धर्मास्तिकाय के पांच भेद) १ द्रव्य से एक २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूप ५ गुण से गति स्वभाव चलन गुण सहाय।

(अधर्मास्तिकाय के ५ भेद) १ द्रव्य से एक २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूप ५ गुण से स्थिर गुण सहाय (स्थिति लक्षण)।

१७–१९ तीनों विकलेन्द्रियों के ३ दण्डक २० पञ्चेन्द्रिय तिर्यंचों का एक दण्डक २१ मनुष्य का एक दण्डक २२ व्यन्तर देवों का एक दण्डक २३ ज्योतिषी देवों का एक दण्डक २४ वैमानिक देवों का एक दण्डक।

१७ लेश्या–छह

१ कृष्ण लेश्या २ नील लेश्या ३ कापोत लेश्या ४ तेजो लेश्या ५ पद्म लेश्या ६ शुक्ल लेश्या।

१८ दृष्टि–तीन

१ सम्यग् दृष्टि २ मिथ्या दृष्टि ३ मिश्र दृष्टि।

१९ ध्यान–चार

१ आर्त ध्यान २ रौद्र ध्यान ३ धर्म ध्यान ४ शुक्ल ध्यान।

२० द्रव्य—छह

१ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय ५ जीवास्तिकाय ६ काल द्रव्य।

षट् द्रव्यों के तीस भेद

(धर्मास्तिकाय के पांच भेद) १ द्रव्य से एक २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूप ५ गुण से गति लक्षण, चलन गुण सहाय।

(अधर्मास्तिकाय के ५ भेद) १ द्रव्य से एक २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूप ५ गुण से स्थिर गुण सहाय (स्थिति लक्षण)।

कायसा ४ कराऊ नहीं मनसा ५ कराऊ नहीं वयसा ६ कराऊ नहीं कायसा ७ अनुमोदू नहीं मनसा ८ अनुमोदू नहीं वयसा ९ अनुमोदू नहीं कायसा ।

२—अङ्क एक १२ (बारह) का–भाङ्ग ९ । १ करण २ योग से कहना ।

१ करू नहीं मनसा वयसा २ करू नहीं मनसा कायसा ३ करू नहीं वयसा कायसा ४ कराऊ नहीं मनसा वयसा ५ कराऊ नहीं मनसा कायसा ६ कराऊ नहीं वयसा कायसा ७ अनुमोदू नहीं मनसा वयसा ८ अनुमोदू नहीं मनसा कायसा ९ अनुमोदू नहीं वयसा कायसा ।

३—अङ्क एक १३ का–भाङ्ग ३ । १ करण ३ योग से कहना ।

१ करू नहीं मनसा वयसा कायसा २ कराऊ नहीं मनसा वयसा कायसा ३ अनुमोदू नहीं मनसा वयसा कायसा ।

४—अङ्क एक २१ का–भाङ्ग ९ । दो करण एक योग से कहना । जैसे कि—

१ करू नहीं कराऊ नहीं मनसा २ करू नहीं कराऊ नहीं वयसा ३ करू नहीं कराऊ नहीं कायसा ४ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा ५ करू नहीं अनुमोदू नहीं वयसा ६ करू नहीं अनुमोदू नहीं कायसा ७ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा ८ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं वयसा ९ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं कायसा ।

५—अङ्क एक २२ का—भाङ्गे ९। दो करण दो योग से कहना चाहिये।

१ करू नहीं कराऊं नहीं मनसा वयसा २ करू नहीं कराऊं नहीं मनसा कायसा ३ करू नहीं कराऊं नहीं वयसा कायसा ४ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा ५ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा कायसा ६ करू नहीं अनुमोदू नहीं वयसा कायसा ७ कराऊं नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा ८ कराऊं नहीं अनुमोदू नहीं मनसा कायसा । ९ कराऊं नहीं अनुमोदू नहीं वयसा कायसा ।

६—अङ्क एक २३ का—भाङ्गे ३। २ करण ३ योग से कहना।

१ करू नहीं कराऊं नहीं मनसा वयसा कायसा २ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा कायसा ३ कराऊं नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा कायसा ।

७—अङ्क एक ३१ का—भाङ्गे ३। तीन करण एक योग से कहना।

१ करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदू नहीं मनसा । २ करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदू नहीं वयसा ३ करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदू नहीं कायसा ।

८—अङ्क एक ३२ का—भाङ्गे ३। तीन करण दो योग से कहना।

१ करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा। २ करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदू नहीं मनसा कायसा। ३ करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदू नहीं वयसा कायसा।

९—अङ्क पर ३३ का—भाङ्ग १। तीन करण तीन योग से करना।

१ करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा कायसा।

२५ चारित्र पांच

१ सामायिक चारित्र २ छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ परिहार विशुद्धि चारित्र ४ सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ५ यथाख्यात चारित्र।

नव तत्त्व वर्णन

अथ नवतत्त्व वर्णन

गाथा

जीवानीव पुण्ण पावासव संवरा य निज्जरणा ।
बंधो मोक्खो अ तहा नवतत्ताहुन्ति नायव्वा ॥१॥
धम्मा धम्मागासा तिय तिय भेया तहेव अद्धाय ।
खंदा देस पएसा परमाणु अजीव चउदसहा ॥२॥
धम्मा धम्मागासा तिय तिय भेया तहेव अद्धाय ।
एए चउमुत्ति दव्व मिच्छ काल भाव गुणा ॥३॥
इन्दिय कसाय अव्वय जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कम्मा ।
किरियाउ पणवीसं इमाओ तासो अणुक्कमसो ॥४॥
समइ गुत्ति परिसह जइ धम्मो भावना चरित्ताणि ।
पनत्ति दुवाल इगवार पंचभेएहि सत्तावन्ना ॥५॥
आहा कम्म उद्देसिय पूइकम्मय मिस्सजाये ।
ठवणा पाहुडियाए पाओअरकिय पामिच्च ॥६॥
परिट्टिय अभिहडउब्भिन्न मालोहडेय अच्छिज्जे ।
अतिसिट्टे अज्झोयरोय सोलस पिंडग्गम दोस्सा ॥७॥
धाइ दूइ निमित्त अजीव वणीमगे तिगिच्छाये कोह
माणे मायालोभे ये हवन्ति दस दोसा । पुव्विपच्छा संथवविज्जामंत चुण्ण जोग उपायनाय दोसा सोलसमे मूलकम्म ।

गच्छिय मच्छिय निच्छियापिच्छिय माहरिय दाय। [illegible]। [illegible] दोसा दस हवंति।

[illegible] मुणायव्विया [illegible] [illegible] रस [illegible]। [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होइ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] होइ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अणुभागा

[illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

नवतत्त्व नाम

१ जीवतत्त्व २ अजीवतत्त्व ३ पुण्यतत्त्व ४ पापतत्त्व ५ आस्रवतत्त्व ६ संवरतत्त्व ७ निर्जरातत्त्व ८ बन्धतत्त्व ९ मोक्षतत्त्व।

इन [illegible] [illegible] में नवतत्त्व [illegible] किए हैं जिनमें — जीव अजीव पुण्यतत्त्व, [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible]) हैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं। [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible]) हैं।

[illegible] — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

जैसे—पुण्य पाप आस्रव बन्ध यह चार रूपी हैं। जीव संवर, निर्जरा मोक्ष यह चार अरूपी हैं। अजीव रूपी अरूपी दोनों प्रकार का होता है।

१ जीवतत्त्व

जीव किसे कहते हैं? पुण्य पाप का कर्ता सुख दुःख का भोक्ता चेतना लक्षण सहित प्राणों का धारक अविनाशी इत्यादि लक्षणों वाले को जीव कहते हैं।

जीव का जघन्य एक भेद चेतना लक्षण मध्यम १४ (चौदह) भेद उत्कृष्ट ५६३ भेद हैं।

मध्यम चौदह भेद इस प्रकार हैं—

जीव का १ भेद–चेतना लक्षण।

जीव के २ भेद–१ त्रस २ स्थावर।

जीव के ३ भेद–१ स्त्री वेद २ पुरुष वेद ३ नपुंसक वेद।

जीव के ४ भेद–१ नारकी २ तिर्यञ्च ३ मनुष्य ४ देवता।

जीव के ५ भेद–पाँच जातियाँ–१ एकेन्द्रिय २ द्वीन्द्रिय ३ त्रीन्द्रिय ४ चतुरिन्द्रिय ५ पंचेन्द्रिय।

जीव के ६ भेद–१ पृथ्वी २ अप् ३ तेउ ४ वायु ५ वनस्पति, ६ त्रसकाय।

जीव के ७ भेद–१ नारकीय २ देव ३ देवी ४ मनुष्य ५ मानुषी ६ तिर्यग् ७ तिर्यञ्ची।

जीव के ८ भेद—चार गति का, पर्याप्त अपर्याप्त।

जीव के ९ भेद—पांच स्थावर चार त्रस।

जीव के १० भेद पांच जाति का पर्याप्त, अपर्याप्त।

जीव के ११ भेद—चार सूक्ष्म पृथ्वीकाय से लेकर वनस्पति पर्यन्त। छः बादर पृथ्वीकाय से लेकर त्रस तक।

जीव के १२ भेद—छः काया के जीव पर्याप्त, अपर्याप्त।

जीव के १३ भेद—१ पृथ्वीकाय २ अप्काय ३ तेउकाय ४ वनस्पतिकाय के दो भेद हैं ५ प्रत्येक ६ साधारण ७ द्वीन्द्रिय ८ त्रीन्द्रिय ९ चतुरिन्द्रिय। पंचेन्द्रिय के चार भेद। १० नारकी ११ तिर्यञ्च १२ मनुष्य १३ देवता।

जीव के १४ भेद—एकेन्द्रिय के ४ भेद—सूक्ष्म, बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त। द्वीन्द्रिय के दो भेद—पर्याप्त, अपर्याप्त। त्रीन्द्रिय के २ भेद—पर्याप्त और अपर्याप्त। चतुरिन्द्रिय के दो भेद पर्याप्त अपर्याप्त। पंचेन्द्रिय के ४ भेद—सन्नी, असन्नी का पर्याप्त अपर्याप्त।

जीव के उत्कृष्ट ५६३ भेद

नरिय तिरियनरामरा चउदस अडयाल तिन्नीसयतिन्नेव अडयाल् सयसय पणसय सयायतमट्ठा।

नरक के १४ भेद

१ घम्मा २ वंशा ३ शीला, ४ अंजना, ५ रिट्ठा, ६ मघा ७ माघवई इन सातों का पर्याप्त और अपर्याप्त एवं १४ चौदह।

सात नारकी के गोत्र

१ रत्न प्रभा २ शर्कर प्रभा ३ बालु प्रभा ४ पंक प्रभा ५ धूम प्रभा ६ तम प्रभा ७ तमतमा प्रभा एवं १४।

तिर्यञ्च के ४८ भेद

एकेन्द्रिय के २२

पृथ्वीकाय के ४ भेद–सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

अप्काय के ४ भेद–सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

तेउकाय के ४ भेद–सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

वायुकाय के ४ भेद–सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

वनस्पति काय के ६ भेद

सूक्ष्म प्रत्येक, साधारण। इन तीनों का पर्याप्त और अपर्याप्त। एवं एकेन्द्रिय के कुल २२ भेद हुए।

विकलेन्द्रिय के ६ भेद

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय इन तीनों का पर्याप्त और अपर्याप्त।

तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय के २० भेद

जलचर १ स्थलचर २ खेचर ३ उरपुर ४ भुजपुर ५ यह पांच संज्ञी और पांच असंज्ञी। इन दस का पर्याप्त और अपर्याप्त एवं २०। सब मिलकर तिर्यञ्च के ४८ भेद हुए।

जो जल में चले उसे जलचर कहते हैं। जैसे—मच्छ, कच्छ, मगर, गाहा, सुंसुमारादि, इनका कुल १२॥ लाख करोड़ का है।

जो पृथ्वी पर चले उसे स्थलचर कहते हैं। जैसे—एक खुरा—गधा, घोड़ा, खच्चर आदि। दो खुरा—गाय, भैंस, बकरी आदि। गंडीपया—हाथी, गैंडा आदि। सनखपया—शेर, बिल्ली, कुत्ता आदि। इनका कुल १० करोड़ का है।

जो आकाश में उड़ने वाले जीव हैं उन्हें खेचर कहते हैं। जैसे—चरम पक्षी—चमड़े के पंख वाले। चामचिड़ी, (चमगीदड़) आदि। रोम पक्षी—जैसे, सोनाचिड़ी, कबूतर आदि। समुद्ग पक्षी—जिनके पंख डब्बे के आकार के हैं, यह अढ़ाई द्वीप के बाहर होते हैं। वितत पक्षी—जिनके पंख कमरपान के आकार के होते हैं। ये भी अढ़ाई द्वीप के बाहर होते हैं। इनका कुल १२ लाख करोड़ का होता है।

जो छाती के बल से चलें उनको उरपुर कहते हैं। जैसे—अहि, अजगर, महोरग, आसालिया आदि। इनका कुल १० करोड़ का होता है।

जो भुजाओं के बल से चलें उनको भुजपुर कहते हैं। जैसे—नेवला, चूहा, गलहरी आदि। इनका कुल ९ करोड़ का होता है।

इस प्रकार तिर्यंच के ४८ भेद हुए।

३०३ तीन सौ तीन प्रकार के मनुष्य

१५ (पन्द्रह) कर्मभूमि के मनुष्य ३० (तीस) अकर्मभूमि के मनुष्य, ५६ (छप्पन) अन्तरद्वीपों के मनुष्य ये सब एक सौ एक हुए। इन एक सौ एक का पर्याप्त और अपर्याप्त ये सौ दो हुए। एक सौ एक गर्भज के सम्मूर्च्छिम मनुष्य=अपर्याप्त। कुल तीन सौ तीन हुए।

१ कर्मभूमि के मनुष्य—कर्मभूमि किसे कहते हैं? जहाँ असि–शस्त्रविधि मसी–लेखनविधि कृषि–खेती कर्म शास्त्रादि–साधु साध्वी धर्म व्यवहार ७२ कला मनुष्यों की, ६४ कला स्त्रियों की १०० सौ प्रकार का शिल्पकर्म। जहाँ पर यह सब कार्य विद्यमान हों उसे कर्मभूमि कहते हैं। ५ भरत ५ ऐरावत ५ महाविदेह ये १५ कर्मभूमि मनुष्यों के क्षेत्र हैं। एक लाख योजन का जम्बूद्वीप है। इसमें एक भरत, एक ऐरावत, एक महाविदेह ये तीन क्षेत्र हैं।

जम्बूद्वीप के चारों ओर दो लाख योजन का लवण समुद्र है। लवण समुद्र के चारों ओर ४ लाख योजन का धातकी खण्ड है। धातकी खण्ड में २ भरत २ ऐरावत २ महाविदेह यह छः क्षेत्र हैं। धातकी खण्ड के चारों ओर आठ लाख योजन का कालोदधि समुद्र है। कालोदधि के चारों ओर १६ लाख योजन का पुष्करद्वीप है। इसके मध्य चारों ओर मानुषोत्तर पर्वत है, उसके आभ्यन्तर अर्ध

४ दीपांग=जिनसे रोशनी निकलती है।

५ ज्योतिरंग=सूर्यवत् तेज कान्ति वाले।

६ चित्रांग=चित्राम सहित पुष्पों की माला-गुच्छ हैं जिसमें।

७ चित्ररसा=मनोगम भोजन सामग्री के दाता।

८ मणियंगा=अनेक प्रकार के वस्त्रों का काम देने वाले गुण हैं।

९ गेहागारा=विविध अनेक प्रकार के आभूषणों के देने जैसे गुण हैं।

१० गृहागारा=भोजन घरों के आकार वाले मनोरम शयनादि विश्राम के दाता।

४६ अन्तरद्वीप मनुष्य कहां है?

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की मर्यादा करने वाला चुल्लहिमवान पर्वत है। जिसकी स्वर्णमयी १०० योजन का ऊंचा योजन का भूमि में १०५२ योजन १२ कला का चौड़ा योजन का लम्बा इसकी बाहु ५३५० योजन १५ कला की एक एक है इसकी जिह्वा २४९३२ योजन कला की है। इसकी धनुष पिच्छिका २५२३० योजन ४ कला की है। पर्वत के पूर्व पश्चिम में ४ दाढ़ हैं। एक एक चौरासी सौ योजन से कुछ अधिक लवण समुद्र में गयी हैं। एक एक दाढ़ पर सात सात अन्तरद्वीप (कुद्वीप) हैं। सो इस प्रकार है—

मेढमुहे ^^ विज्जुमुह २३ विज्जुदन्त २४ घणदन्त २५ लठदन्ते २६ गुठदन्ते ७ सुधदन्त ८।

अट्ठाइस मुल्लक्षमवन्न पवन व अट्ठाइस मिसरी पवन व।

इति ५६ अन्तरद्वीप मनुष्य वर्णन।

१५ कर्मभूमि ३० अकर्मभूमि ५६ अन्तरद्वीप यह १०१ हुए। इनका पर्याप्त और अपर्याप्त २०२ हुए। इन्हीं के १०१ क्षेत्रों के सम्मूर्छिम मनुष्य अपर्याप्त सब मिलकर मनुष्यों के ३०३ भेद हुए।

सम्मूर्छिम मनुष्य १४ स्थानों में उत्पन्न होते हैं। १४ स्थानों के नाम—उच्चारेसु वा १ पासवणेसु वा खेलेसु वा सिंघाणेसु वा ४ वंतेसु वा पित्तेसु वा पूयेसु वा ७ सोणियेसु वा ८ सुक्केसु वा ९ सुक्कपुग्गलपरिसाडेसु वा १० मृतक जीवकलेवरेसु वा ११ स्त्रीपुरुषसंयोगेसु वा १२ नगरनिद्धमनेसु वा १३ सव्वअसुचाठाणेसु वा १४।

१९८ प्रकार के देवता

१० प्रकार के भवनपति देव—असुर कुमार १ नाग कुमार २ सुवर्ण कुमार ३ विद्युत कुमार ४ अग्नि कुमार ५ द्वीप कुमार ६ उदधि कुमार ७ दिशा कुमार ८ पवन कुमार ९ स्तनित कुमार १०।

१५ प्रकार के परमाधर्मी देव—अंबे १ अंबरसे २ सामे ३ सबले ४ रुद्दे ५ विरुद्दे ६ काले ७ महाकाले ८ असीपत्ते

९ धनुष्ये १० कुम्भिये ११ वालुए १२ वैतरणी १३ खरस्वरे १४ महाघोसे १५।

१६ प्रकार के वाणव्यन्तर देव—पिशाच १ भूत २ यक्ष ३ राक्षस ४ किन्नर ५ किंपुरुष ६ महोरग ७ गन्धर्व ८ आणपन्ने ९ पाणपन्ने १० इसीवाय ११ भूयवाय १२ कन्दीय १३ महाकन्दिय १४ कुहण्ड १५ पयगदेवा १६।

१० प्रकार के तिर्यग्जृम्भक देव—अन्न जृम्भका १ पान जृम्भका २ लयण जृम्भका ३ सयण जृम्भका ४ वस्त्र जृम्भका ५ पुष्पजृम्भका ६ पुष्प फल जृम्भका ७ फल जृम्भका ८ बीज जृम्भका ९ अव्यक्त जृम्भका १०।

१० प्रकार के ज्योतिषी देव—चन्द्रमा १ सूर्य २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ तारा ५। चर ५ अचर ५ अचर कुल १० हुए। यह अढाई द्वीप में चलते हैं और बाहर अचल होते हैं।

३ प्रकार के किल्विषी देव—तीन पल्य वाले १ तीन सागर वाले २ तेरह सागर वाले ३।

तीन पल्य वाले ज्योतिषी देवों से ऊपर हैं परन्तु पहले दूसरे देवलोक से नीचे। तीन सागर वाले पहले दूसरे देव लोक से ऊपर किन्तु तीसरे चौथे देवलोक से नीचे हैं।

तेरह सागर वाले—पाँचवें देवलोक से ऊपर और छठे देवलोक से नीचे।

९ प्रकार के लोकान्तिक देव—सर्वे १ सर्वे २ वह्नि ३

धरणी ४ गद्दतोया ५ तुषिया ६ अव्याबाह ७ अग्गिच्चा ८ रिट्ठाय चेव ९।

१२ प्रकार के कल्पवासी देव—सुधर्मा देवलोक १ ईशान देवलोक २ सनत्कुमार देवलोक ३ माहेन्द्र देवलोक ४ ब्रह्म देवलोक ५ लान्तक देवलोक ६ महाशुक्र देवलोक ७ सहस्रार देवलोक ८ आणत देवलोक ९ प्राणत देवलोक १० आरण देवलोक ११ अच्युत देवलोक १२।

नव ग्रैवेयक देवलोक—भद्र १ सुभद्र २ सुजात ३ सुमनसे ४ सुदर्शन ५ प्रियदर्शन ६ अमोह ७ सुप्रतिबुद्ध ८ यशोधर ९।

पाँच अनुत्तर विमानों के नाम—विजय १ वैजयन्त २ जयन्त ३ अपराजित ४ सर्वार्थसिद्ध ५। यह सब ९९ प्रकार के देवता हुए। इन ९९ का पर्याप्त और अपर्याप्त मिल १९८ हुए।

इति जीवतत्त्व समाप्त।

२ अजीवतत्त्व

अजीव पुण्य पाप का कर्ता नहीं सुख दुःख का भोक्ता नहीं शुभाशुभ कर्म कर्ता नहीं भोक्ता नहीं, अचेतना लक्षण, योगप्राण रहित, जड़ लक्षण सहित।

अजीव तत्त्व के जघन्य १४ भेद हैं जो कि पच्चीस बोल के थोकड़े में आ चुके हैं।

उत्कृष्ट ५६० भेद जिसमें ३० अरूपी और ५३० रूपी हैं।

३० अरूपी जैसे—धर्मास्तिकाय के ३ भेद। स्कन्ध १

धाल का करिये भाजन–चार रसिय प्रतिपक्षी बोल पावें २०। २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श ५ संस्थान एवं २०।

जाल का करिय भाजन–चार रसिय प्रतिपक्षी बाल पावें बास। २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श ५ संस्थान एवं ।

लाल का करिय भाजन–चार रसिय प्रतिपक्षी बाल पावें २०। २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श संस्थान एवं २०।

पीले का करिय भाजन–चार रसिय प्रतिपक्षी बाल पावें २०। २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श ५ संस्थान एवं ।

सफेद का करिय भाजन–चार रसिय प्रतिपक्षी बाल पावें २०। २ गन्ध रस ८ स्पर्श संस्थान एवं ।

सब मिलकर २०×५=१०० भंग वर्णों के हुए।

दो गन्ध

सुगन्ध का करिय भाजन–दुर्गन्ध रसिय प्रतिपक्षी बोल पावें २३। ५ वर्ण ५ रस ८ स्पर्श संस्थान एवं

दुर्गन्ध का करिय भाजन–सुगन्ध रसिय प्रतिपक्षी बाल पावें २३। ५ वर्ण ५ रस ८ स्पर्श संस्थान एवं। सब मिलकर ४६ हुए।

पांच रस

कड़ुवा, कषायला, खट्टा, मीठा, तीखा।

कड़ुवे का करिय भाजन–चार रसिय प्रतिपक्षी बोल पावें २०। ५ वर्ण २ गन्ध ८ स्पर्श ५ संस्थान एवं २०।

कषायले का करिय भाजन–चार रसिय प्रतिपक्षी बोल

मम का वर्णित आयत—छहा वर्णित प्रतिपक्षी। बोल पावे २१। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ■ स्पर्श ५ संस्थान एवं २३।

ठण्ड का वर्णित आयत—लघा वर्णित प्रतिपक्षी। बोल पावे २१। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ६ स्पर्श ५ संस्थान एवं ।

स्नेह का वर्णित आयत—चिकना वर्णित प्रतिपक्षी। बोल पावे २१। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ६ स्पर्श संस्थान एवं २१।

चिकन का वर्णित आयत—रूखा वर्णित प्रतिपक्षी। बोल पावे २१। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ६ स्पर्श संस्थान एवं ।

एवं सब मिलकर ४३X एवं सौ चौरासी और ८ स्पर्शों के हुए।

५ पाँच संस्थान

१ परिमण्डल संस्थान २ वृत्त संस्थान ३ त्र्यस्र संस्थान ४ चउरस संस्थान ५ आयत संस्थान

परिमण्डल का वर्णित आयत—चार वर्णित प्रतिपक्षी। बोल पावे २०। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श एवं २०।

वृत्त संस्थान का वर्णित आयत—चार वर्णित प्रतिपक्षी। बोल पावे २०। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श एवं २०।

त्र्यस्र संस्थान का वर्णित आयत—चार वर्णित प्रतिपक्षी। बोल पावे २०। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श एवं २०।

चउरस संस्थान का वर्णित आयत—चार वर्णित प्रतिपक्षी। बोल पावे २०। ५ वर्ण २ गन्ध ५ रस ८ स्पर्श एवं २०

वदनीय कम की १ प्रकृति–सातावदनीय ।

आयु कम की ३ प्रकृति–१ देवता की आयु २ मनुष्य की आयु ३ सन्नीपचेंद्रिय तिर्यञ्च की आयु युगलियों की अपेक्षा ।

गोत्रकम की एक प्रकृति–उच्च गोत्र ।

नाम कम की ३७ प्रकृति–

गति दो–१ मनुष्य गति २ देवगति ।

जाति एक–१ सन्नी पचेंद्रिय ।

शरीर पांच–१ औदारिक शरीर २ वैक्रिय शरीर आहारिक शरीर ४ तैजस शरीर ५ कार्माण शरीर ।

तीन अङ्गोपाङ्ग–१ औदारिक का अङ्गोपाग २ वैक्रिय का अगोपाग ३ आहारिक का अगोपाग ।

सघयण एक–वज्र ऋषभ नाराच सघयण ।

सस्थान एक–सम चौरस सस्थान ।

शुभ चार–१ शुभ वर्ण २ शुभ गन्ध ३ शुभ रस ४ शुभ स्पर्श ।

अनापूर्वी दो–१ मनुष्य की अनापूर्वी, २ देवता की अनापूर्वी ।

चाल एक–१ शुभ चाल ।

प्रत्येक नाम की ७ प्रकृति–१ पराघात नाम २ उच्छ्वास नाम ३ आताप नाम ४ उद्योत नाम ५ अगुरु लघुनाम ६ निर्माणनाम ७ तीर्थंकर नाम ।

त्रस नाम की १० प्रकृति

१ त्रस नाम २ बादर नाम ३ प्रत्येक नाम ४ पर्याप्त नाम ५ स्थिर नाम ६ शुभ नाम ७ सौभाग्य नाम ८ सुस्वर नाम ९ आदेय नाम १० यशःकीर्ति नाम।

इति पुण्यतत्त्व समाप्त।

४ पापतत्त्व

पापतत्त्व किसे कहते हैं? पाप बांधना सुलभ, भोगना कठिन। पाप प्राणी को दुःख देता है आत्मा को भारी करता है अशुभ गतियों में ले जाता है अशुभ कर्मों के बांधने में सहायक होता है इत्यादि रोग शोक कष्ट दुःख पाप का फल रूप कहते हैं।

पाप १८ प्रकार से बांधा जाता है

१ प्राणातिपात २ मृषावाद ३ अदत्तादान ४ मैथुन ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान १४ पैशुन्य १५ परपरिवाद १६ रति अरति १७ मायामृषा १८ मिथ्यादर्शन शल्य।

पाप ८२ प्रकार से भोगा जाता है

आठ कर्मों के उत्तर

१ ज्ञानावरणीय कर्म की ५ प्रकृति—१ मतिज्ञानावरणीय २ श्रुतज्ञानावरणीय ३ अवधिज्ञानावरणीय ४ मनःपर्ययज्ञानावरणीय ५ केवलज्ञानावरणीय।

२ दर्शनावरणीय कर्म की ९ प्रकृतियें—१ चक्षुदर्शनावरणीय २

२ अचक्षुदर्शनावरणीय ३ अवधिदर्शनावरणीय ४ केवलदर्शनावरणीय ५ निद्रा ६ निद्रा निद्रा ७ प्रचला ८ प्रचला प्रचला ९ स्त्यानर्द्धि।

३ वेदनीय कर्म की एक प्रकृति–असातावेदनीय।

४ मोहनीय कर्म की २६ प्रकृति–जिसमें १६ कषाय नव नोकषाय।

१६ कषाय

अनन्तानुबंधी की चौक–अनन्तानुबंधी का क्रोध जैसे पत्थर की रेखा। मान जैसे वज्र का स्तम्भ। माया जैसे बाँस की जड़ का बल। लोभ जैसे किरमिच मजीठ का रंग। इन चारों की स्थिति आयु पर्यन्त की, घात करे सम्यक्त्व की, गति नरक की।

अप्रत्याख्यानी की चौक–अप्रत्याख्यानी का क्रोध जैसे सूखे तालाब (जलाशय) की रेखा, मान जैसे हाड़ का स्तम्भ, माया जैसे मेंढे के सींगों का बल, लोभ जैसे नगर की मोरी के कीचड़ का रंग, इन चारों की स्थिति एक वर्ष की, घात करे देशव्रत की (श्रावक व्रत की) गृहस्थ व्रत का, गति तिर्यञ्च की।

प्रत्याख्यानी की चौक–प्रत्याख्यानी का क्रोध जैसे गाड़ी के पहिये की रेखा (लकीर) मान जैसे काष्ठ का स्तम्भ, माया जैसे चलते बैल के पेशाब का बल, लोभ जैसे गाड़ी के खञ्जन का रंग। इन चारों की स्थिति चार मास की, घात करे

साधुसन्त की (सब व्रत की) गति मनुष्य की।

संज्वलन का क्रोध—संज्वलन का क्रोध जैसे पानी की रेखा (लकीर) मान जैसे तृण का स्तम्भ, माया जैसे ऊ के छाले का वक्र लोभ जैसे हल्दी के वस्त्र का रंग। स्थि क्रोध की २ मास की मान की १ मास की, माया की १ दिन की। लोभ का अन्तर्मुहूर्त की घात करे वीतरागपने की गति देवलोक की।

नव नोकषाय—१ हास्य २ रति ३ अरति ४ भय शोक ६ दुगंछा ७ स्त्रीवेद ८ पुरुषवेद ९ नपुंसकवेद ९।

मोहनीय कर्म की नव प्रकृति—एक मिथ्यात्व मोहनीय इस प्रकार कुल २८ हुई।

आयु कर्म की चार प्रकृति—नरक की आयु।

६ नाम कर्म की ३४ प्रकृति।

गति चार—१ नरक गति २ तिर्यञ्च गति।

जाति चार—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय

संहनन पांच ऋषभ नाराच १ नाराच २ अर्द्धनाराच कीलक ५ सेवार्त संहनन ६।

संस्थान पांच—१ न्यग्रोध परिमण्डल संस्थान २ सा संस्थान ३ वामन संस्थान ४ कुब्ज संस्थान ५ हुण्डक संस्थान

अशुभ चार—१ अशुभ वर्ण २ अशुभ गन्ध ३ अशु रस ४ अशुभ स्पर्श।

अनापूर्वी दो–१ नरक की अनापूर्वी २ तिर्यंच की अनापूर्वी ।

चाल एक–अशुभ चाल ।

घात एक–उपघात नाम ।

स्थावर नाम की १० प्रकृति–१ स्थावर नाम २ सूक्ष्म नाम ३ अपर्याप्त नाम ४ साधारण नाम ५ अस्थिर नाम ६ अशुभ नाम ७ दुर्भाग्य नाम ८ दुस्वर नाम ९ अनादेय नाम १० अयशोकीर्ति नाम ।

गोत्र कर्म की एक प्रकृति–नीच गोत्र ।

अन्तराय कर्म की ५ प्रकृति–१ दानान्तराय २ लाभान्तराय ३ भोगान्तराय ४ उपभोगान्तराय ५ बलवीर्य अन्तराय । एवं ८२ ।

इति पापतत्त्व समाप्त ।

५ आश्रव तत्त्व

आश्रवतत्त्व किसे कहते हैं ? जीव रूपी तालाब में आश्रवरूपी नाला से पाप रूपी पानी आवे जिससे आत्मा मलिन और भारी होकर संसार में जन्म, मरण, जरा, रोग, शोक आधिव्याधि अशुभ कर्म बन्ध भोगना फिर उसको आश्रव तत्त्व कहते हैं ।

आश्रवतत्त्व के जघन्य बीस भेद

१ मिथ्यात्व आश्रव २ अव्रत आश्रव ३ प्रमाद आश्रव

९ अपच्चक्खाणिया–प्रत पच्चखाण न करने से, अव्रत से।

१० मिच्छादसन वत्तिया–जिन वचनों पर श्रद्धा न करके विपरीत प्ररूपण करने से।

११ दिट्ठिया–कौतुक–तमाशा अंग आदि अधार्मिक उत्सवों में राग करने से।

१२ पुट्ठिया–रागभाव से स्त्री, पुरुष पशु वस्त्रादि का स्पर्श करने से।

१३ पाडुच्चिया–जीव, अजीव पर द्वेष राग, द्वेष, तन्मय मिलान से।

१४ सामंतोवणिवाइया–अपने या अन्य के द्विपद चौपद वस्तुओं की राग से प्रशंसा करने से।

१५ नेसत्थिया–लकड़ी, कंकर पत्थर आदि पुद्गल को अयत्न से इधर उधर फैंकने से।

१६ साहत्थिया–अपने हाथ से किसी को सताना।

१७ आणवणिया–पापकारी आज्ञा देना।

१८ विदारणीया–जीव अजीव को विदारण करने से।

१९ अणाभोगवत्तिया–अज्ञानपन शून्य उपयोग से लगे।

२० अणवकंखवत्तिया–मिथ्या अन्य धर्म की वांछा करने से

२१ अनुपयोगी–बिना उपयोग कार्य करने से।

२२ समुदाणकिरिया–अशुभ–पाप कार्य में मनुष्यों के साथ कर्म बांधने से।

२३ प्रेमवत्तिया–राग से।

२४ द्वेषवत्तिया–द्वेष करने से।

२५ इरियावहिया क्रिया शुभ योगों से लगने से। प्रथम समय कर्मों का बन्धना है, पहले समय लगते हैं दूसरे समय वेदते हैं। तीसरे समय निर्जरा देते हैं।

१७ प्रकार का असंयम

जैसे— इन्द्रिय ५ आस्रव ५ कषाय ४ अशुभ योग ३ एवं १७।

इति आस्रवतत्त्व समाप्त।

६ संवर तत्त्व

संवर तत्त्व किसे कहते हैं? जीव रूपी तालाब में आस्रव रूपी नाले के द्वारा पापरूपी पानी आते हुए को संवर रूपी पट्टी से रोका जाय उसको संवर तत्त्व कहते हैं।

संवरतत्त्व के सामान्य २० भेद

१ सम्यक्त्व सम्वर २ व्रतप्रत्याख्यान सम्वर ३ अप्रमाद सम्वर ४ अकषाय सम्वर ५ शुभयोग सम्वर ६ प्राणातिपात–जीव की हिंसा न करे तो सम्वर ७ मृषावाद–झूठ न बोले तो सम्वर ८ अदत्तादान–चोरी न करे तो सम्वर ९ मैथुन न सेवे तो सम्वर १० परिग्रह न रखे तो सम्वर ११ श्रोत्रेन्द्रिय वश में करे तो सम्वर १२ चक्षु इन्द्रिय वश में करे तो सम्वर १३ घ्राणेन्द्रिय वश में करे तो सम्वर १४ रसेन्द्रिय वश में करे तो

सम्वर १५ स्पर्श इन्द्रिय वश में करे तो सम्वर १६ मन वश में करे तो सम्वर १७ वचन वश में करे तो सम्वर १८ काय वश में करे तो सम्वर १९ वस्त्रादि यतना से लेवे देवे तो सम्वर २० सुई कुशाग्रमात्र यतना से लेवे रखे तो सम्वर। एवं २० ।

उत्कृष्ट ५७ भेद

जिसमें २२ परिसह—१ क्षुधा परिसह २ पिपासा परिसह ३ शीत परिसह ४ उष्ण परिसह ५ दंसमसग परिसह ६ अचेल परिसह ७ अरति परिसह ८ स्त्री परिसह ९ चर्या परिसह १० निसीहिया परिसह ११ शय्या परिसह १२ आक्रोश परिसह १३ वध परिसह १४ याचना परिसह १५ अलाभ परिसह १६ रोग परिसह १७ तृणफास परिसह १८ जल परिसह १९ सत्कार पुरस्कार २० प्रज्ञा परिसह २१ अज्ञान परिसह २२ दर्शन परिसह ।

आठ प्रवचन=पांच समिति और तीन गुप्ति। पांच समिति जैसे—१ ईर्या समिति २ भाषा समिति ३ एषणा समिति ४ आदान भंड मत्त निक्षेपण समिति ५ उच्चार पासवण खेल जल्ल मल्ल सिंघाण परिठावणिया समिति ।

१ ईर्या समिति के चार भेद—१ आलंबन २ काल ३ मार्ग ४ यत्ना ।

आलंबन के तीन भेद—१ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र ।

काल का एक भेद—ईर्या का काल दिवस का ।

मार्ग का एक भेद—संयम मार्ग चले असंयम मार्ग परजे ।

यत्ना के चार भेद—द्रव्य क्षेत्र काल भाव । द्रव्य से दया शोधता हुआ एवं काल उत्त व चले ।

१ शब्द २ रूप ३ गन्ध ४ रस ५ स्पर्श ६ वायणा ७ पूछना ८ परियट्टना ९ अनुप्रेक्षा १० धर्मकथा ।

क्षेत्र से—साढ़े ३॥ हाथ प्रमाण देखकर चले ।

काल से—दिन को देखकर रात्रि को पूंज कर चले भाव से उपयोग सहित गुण से निर्जरा के हेतु ।

२ भाषा समिति के चार भेद—१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव ।

द्रव्य से आठ बोल वर्ज के भाषा बोले—१ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ ५ हास्य ६ भय ७ मुखरि वचन ८ विकथा ।

क्षेत्र से—जहां विचरे सब को साताकारी—प्रिय भाषा बोले ।

काल से—पहर रात्रि बाद ऊंचे स्वर से न बोले ।

भाव से—उपयोग सहित । गुण से निर्जरा के हेतु ।

४ एषणा समिति के चार भेद—१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव ।

द्रव्य से—साधु अपनी वृत्ति अनुसार ४२ दोष टाल कर आहार पानी ग्रहण करे। गृहस्थी अपनी वृत्ति अनुसार निर्दोष

अपने हक का ग्रहण करे। अन्य के हक पर अधिकार न करे।

क्षेत्र से—साधु अर्ध योजन उपरान्त आहार पानी ले जावे नहीं, खावे नहीं। शौच वास्ते जल उपरान्त भी ले जा सकता है। गृहस्थ—राष्ट्र धर्म को हानि न पहुँचे वहाँ तक व्यावहारिक कार्य करता हुआ राष्ट्रदेश को हानि न पहुँचावे।

काल से—साधु पहले पहर का आहार पानी चौथे पहर न रक्खे। गृहस्थी बिगड़ जाने वाले अन्य (दूसरों) को हानिकारक या जिससे पाप की वृद्धि हो ऐसे द्रव्यों का संचय चिरकाल तक न करे।

भाव से—साधु पांच मांडले के दोष टालकर आहार पानी भोगे।

गाथा

सयोजनाऽपमाणे-इंगाले धूम कारणे पढमा, वसहि सहरतरवा रमइ उज्झम योगा।

गृहस्थ भी रसनेन्द्रिय के वश न होवे।

आदाण भंड मत्त निक्षेपणा समिति के चार भेद—१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से—भंडोपकरण वस्त्र पात्र आदि मर्यादा से अधिक न रक्खे।

क्षेत्र से—खुला बिखेर न रक्खे।

काल से—समय पर प्रतिलेखना करे।

दसवें-त्रस प्राणी बीज हरी पर न परठे । परठ के वोसरे वोसरे करे ।

क्षेत्र से-जहां विचरे ।

काल से-दिन को देखकर रात्रि को परिमार्जन करके परठे ।

भाव से-उपयोग सहित, गुण से निर्जरा के हेतु ।

तीन गुप्ति-१ मनोगुप्ति २ वचन गुप्ति ३ काय गुप्ति ।

मनोगुप्ति के चार भेद-१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव ।

द्रव्य से-सरंभ, समारंभ आरंभ में मन प्रवर्तावे नहीं । यदि प्रवर्ते तो फल न लगने देवे । यदि फल भी लगे तो निष्फल करने का प्रयत्न करे ।

क्षेत्र से-जहां विचरे ।

काल से-आयु पर्यन्त ।

भाव से-उपयोग सहित ।

गुण से-निर्जरा के हेतु ।

वचन गुप्ति के चार भेद-१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव ।

द्रव्य से-सरंभ, समारंभ, आरंभ में वचन प्रवर्तावे नहीं । यदि प्रवर्तावे तो फल न लगने देवे, यदि फल भी लगे आव तो निष्फल करने का प्रयत्न करे ।

क्षेत्र से-जहां विचरे ।

काल से-आयु पर्यन्त ।

भाव से–उपयोग सहित।

गुण से–निर्जरा के हेतु।

काय गुप्ति के ४ भेद–१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से–सरंभ समारंभ, आरंभ में काया प्रवर्तावे नहीं। यदि प्रवर्तन चाहे तो फल न लगने दे यदि फल लग जावे तो निष्फल करने का प्रयत्न करे।

क्षेत्र से–जगत् विचरे।

काल से–आयु पर्यन्त।

भाव से–उपयोग सहित।

गुण से–निर्जरा के हेतु।

१० प्रकार का यतिधर्म

१ क्षान्ति २ मुक्ति ३ आर्जव ४ मार्दव ५ लाघवे ६ सत्य ७ संयम ८ तप ९ चियाग १० बंभचेरवास।

१२ प्रकार की भावना

१ अनित्य भावना भरत चक्रवर्ती ने भावी। २ अशरण भावना अनाथी मुनि ने भावी। ३ संसार असार भावना शालिभद्र जी ने भावी। ४ एकत्व भावना नमिराज ऋषीश्वर ने भावी। ५ अन्य भावना मृगापुत्र जी ने भावी। ६ अशुचि भावना सनत्कुमार चक्री ने भावी। ७ आस्रव भावना समुद्रपाल ने भावी। ८ संवर भावना केशी गौतम जी ने भावी। ९ निर्जरा भावना अर्जुन माली ने भावी। १० धर्म दुर्लभ भावना धर्मरुचि अणगार ने भावी। ११ लोक स्वरूप भावना

निवराज ऋषि ने भाई। १२ बोध दुर्लभ भावना आदिनाथ जी के ९८ पुत्रों ने भाई।

चारित्र पांच

१ सामायिक चारित्र २ छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ परिहार विशुद्धि चारित्र ४ सूक्ष्म संपराय चारित्र ५ यथाख्यात चारित्र।

इति संवरतत्त्व समाप्त।

७ निर्जरातत्त्व

निर्जरातत्त्व किसे कहते हैं? जीवरूपी वस्त्र पापरूपी मैल से जो मलिन हो गया है उसको ज्ञान रूपी जल और तप संयम रूपी साबुन से धोकर साफ आत्मा को निर्मल कर उसको निर्जरा तत्त्व कहते हैं।

अथवा निर्जरा तत्त्व के मुख्य १२ भेद हैं और १२ प्रकार का तप—

१ अनशन २ ऊनोदरी ३ भिक्षाचरी ४ रस परित्याग ५ कायक्लेश ६ प्रतिसंलीनता यह ६ प्रकार का आभ्यन्तर (अन्दर का) तप ७ प्रायश्चित्त ८ विनय ९ वैयावृत्य १० स्वाध्याय ११ ध्यान १२ विउत्सर्ग। यह ६ प्रकार का बाहर का तप है।

अनशन के दो भेद—१ इत्वरकाल—थोड़े समय का २ आयुकाल—आयुपर्यन्त का।

छायाकाल के छ भेद—१ श्रेणि तप २ प्रतर तप ३ घन तप ४ वर्ग तप ५ वर्गावर्ग तप ६ आकीर्ण तप।

श्रेणि तप के १४ भेद—१ व्रत २ बेला ३ तेला ४ चौला ५ पचौला ६ छौला ७ सतौला ८ अधमास ९ मास १० दो मास ११ तीन मास १२ चार मास १३ पांच मास १४ छ मास तप करें।

प्रतर तप के १६ भेद—व्रत, बेला, तेला चौला।
बेला तेला चौला व्रत।
तेला चौला व्रत बेला।
चौला व्रत बेला, तेला।

१	-	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३

घन तप के ६४ भेद—१६ व्रत, १६ बेले, १६ तेले, १६ चौले तप करे।

वर्ग तप के ४०९६ चार हजार छियानवे भेद। जैसे—एक हजार चौबीस १०२४ व्रत, एक हजार चौबीस १०२४ बेले, एक हजार चौबीस १०२४ तेले, एक हजार चौबीस चौले तप करें। एवं ४०९६ हुए।

पयालिस लाख के एक करोड़ सड़सठ लाख सतत्तर हजार दो सौ सोलह भंग। (१६७७७२१६) अर्थात्— ४१ इकतालीस लाख चालीस हजार तीन सौ चार ४१०४३०४ मन ४१०४३०४ वचन ४१०४३०४ तन ४१०४३०४ श्रोत। सब १६७७७२१६ भंग।

इस तरह और बहुत तरह भी विचार किया जाता है। आगे इस प्रथम खण्ड में अनुसन्धान की कोई हानि न नहीं हो सकता।

आलोचना के १० भेद—१ अकम्पित २ अनुमानित ३ दृष्ट ४ बादर ५ सूक्ष्म ६ निर्विकल्प ७ आत्मन ८ अभिमद ९ परम पदस्थान १० ... इत्यादि आलोचना भेद हजार का उच्चारण है जिसमें आयु बल के ... भेद। मन वचन काय कृत कारित अनुमोदना से शमन करना।

प्रतिक्रमण के ६ भेद—१ मन के भीतर करे। २ मन के बाहर करे। ३ प्रमाद से करे। ४ बिना कारण से करे। ५ प्रायश्चित्त सहित करे। ६ प्रायश्चित्त रहित करे।

प्रतिक्रमण के ७ भेद—१ मन में करे २ मन से बाहर करे ३ प्रमाद से करे ४ बिना कारण से करे ५ प्रायश्चित्त सहित करे ६ प्रायश्चित्त रहित करे ७ गुरु के सन्मुख करे।

प्रत्याख्यान के ५ भेद—१ मन में करे २ मन से बाहर

कर रागा म कर उन इनन चल-
नाए नण म न्न क ा मे हो
विदन रह

ज्नाम्री क अ न उनोदरी।
न ज्नाम्री क न नोदरी ?
उपधा उनोदरी नया न

आहार ज्नोदरी क न क अ प्म क कवल
आ क रवल ना क करे

पुरुष एक कवल आर नाम का आहार करे
तो जघन्य उनोदरी एक नाम उाल एक का आहार कर तो
उत्कृष्ट उनोदरी। बाकी म यम उनोदरी।

स्त्री एक कवल गाइ और का आहार कर तो
जघन्य ऊनोदरी और २८ झाड़ और एक का आहार कर तो
उत्कृष्ट उनोदरी। बाकी मध्यम उनोदरी।

नपुंसक एक कवल उ २३ का आहार करे तो जघन्य
उनोदरी और २३ कँवल छाड़ एक का आहार करे तो उत्कृष्ट
उनोदरी। बाकी मध्यम ज्नोदरी।

उपधि उनोदरी भण्डावगरण—मवपात्र

१८—सिज्जा सथाच के

२।

ऊनोदरी के अ—१ अल्प

अल्प माया ४ अल्प लोभ ५ अल्प शब्द (भाषी) ६ अल्प खिजना ७ अल्प कलह ८ अल्प तुम तुमाट ।

भिक्षाचरी के ४ भेद

१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव ।

द्रव्य भिक्षाचरी के २६ भेद—१ उक्खित्तचरी २ णिक्खित्तचरी ३ उक्खित्त निक्खित्तचरी ४ निक्खित्त उक्खित्त चरी ५ वट्टिज्जमानचरी ६ साहरिज्जमानचरी ७ उपनीतचरी ८ अवनीतचरी ९ उपनीत अवनीतचरी १० अवनीत उपनीतचरी ११ संसट्ठचरी १२ असंसट्ठचरी १३ संजातसंसट्ठचरी १४ अण्णाय चरी १५ मोनचरी १६ दिट्ठलाभे १७ अदिट्ठलाभे १८ [illegible] लाभे १९ अपुट्ठलाभे २० भिक्खलाभे २१ अभिक्खलाभे २२ अनगिलाय २३ ओवणिहिए २४ परिमित पिण्डवाई २५ सुद्धेषणाय २६ संखादत्तिय ।

क्षेत्र भिक्षाचरी के ८ भेद—१ पेटी के आकार २ अध पेटी के आकार ३ सिंघाड़े के आकार ४ शंख के आकार ५ गोमूत्र के आकार ६ पतंग के आकार ७ जाते फरसे आते हुए न फरसे ८ जाते हुए फरसे आते हुए न फरसे ।

कालभिक्षाचरी के चार भेद—१ पहले पहर लावे पहले पहर भोगे बाकी तीन पहर का त्याग करे । २ दूसरे पहर लावे दूसरे पहर भोगे बाकी तीन पहर त्यागे ३ तीसरे पहर लावे तीसरे पहर भोगे बाकी तीन पहर का त्याग करे ४ चौथे पहर लावे चौथे पहर भोगे बाकी तीन पहर का त्याग करे ।

१० प्रकार से आलोचना करता हुआ दोष लगावे–१ कांपता कांपता आलोवे तो दोष लगावे २ अनुमान प्रमाण से आलोवे तो दोष लगावे ३ देखा हुआ आलोचे अनदेखा हुआ न आलोवे तो दोष लगावे ४ मूल मूल्म आलोवे बादर बादर न आलोवे तो दोष लगावे । ५ बादर बादर आलोचे सूक्ष्म सूक्ष्म न आलोवे तो दोष लगावे गुप्त गुप्त अव्यक्त शब्दों से आलोवे तो दोष लगावे ७ ऊंचे स्वर से आलोवे तो दोष लगावे अनजान के आगे आलोवे तो दोष लगावे ९ बहुतों के आगे आलोवे तो दोष लगावे १० प्रायश्चित्त के पास आलोवे तो दोष लगावे ।

१० गुणों का धारक आलोचना करता है १ जातिवान २ कुलवान ३ विनयवान ४ ज्ञानवान दर्शनवान ६ चारित्रवान ७ क्षमावान ८ वैराग्यवान ९ पांचों इन्द्रियों का दमन करने वाला १० अमाई अपच्छानाई प्रायश्चित्त लेकर पश्चाताप करने वाला ।

१० दस गुणों के धारक के पास आलोचना करनी चाहिये–१ आचारवन्त हो २ धारणावन्त हो ३ पांच व्यवहारों का जानने वाला हो जैसे–आगमव्यवहार, सूत्रव्यवहार, आज्ञा व्यवहार, धारणाव्यवहार, जीतव्यवहार । ४ माय छिपा कर शुद्ध करने की सामर्थ्य हो ५ लज्जा हटाने की सामर्थ्य रखता हो ६ खण्ड खण्ड करके प्रायश्चित्त देवे ७ इस लोक और परलोक का भय दिखावे ८ आलोचा हुआ दोष

प्रगट न करे ९ प्रियधर्मी होवे १० दृढधर्मी होवे।

१० प्रकार का प्रायश्चित—१ आलोचना प्रायश्चित २ प्रति
क्रमण प्रायश्चित ३ तदुभय प्रायश्चित ४ विवेक प्रायश्चित
व्युत्सर्ग प्रायश्चित ६ तप प्रायश्चित ७ छेद प्रायश्चित
मूल प्रायश्चित ९ अनुठप्पा प्रायश्चित १० पारंचिया प्रायश्चि

विनय के सात भेद १ ज्ञान विनय २ दर्शन विनय
चारित्र विनय ४ मन विनय ५ वचन विनय ६ कायवि
७ लोकोपचार विनय।

ज्ञान विनय के ५ भेद—१ मति ज्ञानी की विनय
२ श्रुत ज्ञानी की विनय करे ३ अवधिज्ञानी की विनय
४ मन पर्यव ज्ञानी का विनय करे ५ केवल ज्ञानी की वि
करे।

दर्शन विनय के दो भेद—१ सुश्रूषा विनय २ अना
शातना विनय।

सुश्रूषा विनय के १० भेद—१ गुरु आवे तो खड़ा
२ आसन बिछावे ३ चार प्रकार का निर्दोष आहार प
लाकर देवे ४ गुरु की आज्ञानुसार वरते ५ वन्दना
(गुणग्राम करे) ६ नमस्कार करे ७ सम्मान देवे ८ आ
को स्वागत करे ९ रहे तो सेवा भक्ति करे १० जावे
पहुंचाने जावे।

अनाशातना विनय के ४५ भेद—अरिहन्त अरि
देव की विनय करे २ अरिहन्त प्ररूपित धर्म का विनय

[illegible] अवस्था [illegible] अवग्रह [illegible] अवकाश [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अप्रमाद [illegible] [illegible] अनुवादान्त

[illegible] अवस्था [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पलटना (पीठ आगे) ७ उपयोग से पांचों इन्द्रियों को शान्ति से वश कर मन से करना।

अप्रशस्त काया विनय के ७ भेद—१ बिना उपयोग चलना २ बिना उपयोग खड़े होना ३ बिना उपयोग बैठना ४ बिना उपयोग सोना ५ बिना उपयोग किसी चीज को उलंघना ६ बिना उपयोग पांव हरना ७ बिना उपयोग इन्द्रियों को खुले रूप से शान्ति में रखना।

वैयावच्च के १० भेद १ आचार्य की वैयावच्च करे २ उपाध्याय की वैयावच्च करे ३ स्थविर की वैयावच्च करे ४ कुल की वैयावच्च करे ५ गण की वैयावच्च करे ६ संघ की वैयावच्च करे ७ नव दीक्षित की वैयावच्च करे ८ रोगी की वैयावच्च करे ९ तपस्वी की वैयावच्च करे १० स्वधर्मी की वैयावच्च करे

स्वाध्याय के ५ भेद—१ वाचना २ पृच्छना ३ परियट्टना ४ अनुप्रेक्षा ५ धर्मकथा

ध्यान के ४ भेद—१ आर्तध्यान २ रौद्र ध्यान ३ धर्म ध्यान ४ शुक्ल ध्यान।

व्युत्सर्ग के ८ भेद—४ द्रव्य ४ भाव।

[illegible] १ [illegible] [illegible] का [illegible] है। [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] है। [illegible] ४ [illegible] कर्मों का [illegible] [illegible] को

बन । ३ अप्रत्ये-[illegible] बन [illegible] । ४ प्रत्य-
न्द [illegible] बन्ध कामल [illegible] ([illegible]) बन ।

चार अनुपात (विचार) १ [illegible] [illegible] का
[illegible] चिन्ह (विचार) । [illegible] [illegible]
(प्रकृति) [illegible] हैं । [illegible] कर्मों का
[illegible] है । ४ [illegible] [illegible] [illegible]
अर्थात् [illegible] नहीं हो सकता

[illegible]

१ [illegible] [illegible] [illegible] ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इति [illegible] समाप्त

८ बन्धतत्त्व

बन्ध तत्त्व किसे कहते हैं ?

[illegible]

मिलकर आत्मप्रदेशों पर छाकर जाते हैं उन्हें आस्रव कहते हैं।

और कर्मों का आना बन्धरूप होकर आत्मप्रदेशों पर जम [illegible] बंध कहते हैं। इसलिए इसको बन्धतत्त्व कहते हैं।

बन्धतत्त्व के मुख्य ४ भेद हैं १ प्रकृतिबन्ध—जो कर्म बनते हैं उनमें अलग अलग काम करने का स्वभाव पड़ना। २ प्रदेशबन्ध—जो कर्म [illegible] में [illegible] उन वर्गणाओं की अलग होना। ३ स्थितिबन्ध—कर्मों का बंध समय की अवधि (मर्यादा) का निश्चय होना। ४ अनुभागबन्ध—फल देने समय कर्मों का तीव्र या मन्द [illegible] होना।

[illegible] के निमित्त से आत्मा [illegible] और कषायादि भावों की तीव्रता या मन्दता के अनुसार [illegible] होते हैं।

[illegible] प्रकृतिबन्ध [illegible] आठ कर्मों की १४८ प्रकृति।

ज्ञानावरणीय की [illegible] प्रकृति—१ मति ज्ञानावरणीय २ श्रुत ज्ञानावरणीय [illegible] ४ मनःपर्यय ज्ञानावरणीय [illegible] केवलज्ञानावरणीय

दर्शनावरणीय कर्म की ९ प्रकृति—१ चक्षुदर्शनावरणीय २ अचक्षुदर्शनावरणीय ३ अवधिदर्शनावरणीय ४ केवलदर्शनावरणीय ५ निद्रा ६ निद्रानिद्रा ७ प्रचला ८ प्रचलाप्रचला ९ स्त्यानगृद्धि।

वेदनीय कर्म की २ प्रकृति—१ सातावेदनीय २ असातावेदनीय

मोहनीयकर्म की २८ प्रकृति—जिसके दो भेद—१ चारित्र मोहनीय २ सम्यक्त्व मोहनीय।

चारित्रमोहनीय की २५ प्रकृति तो कि पापतत्त्व में आ चुकी हैं।

और सम्यक्त्व मोहनीय की ३ प्रकृति—१ मिथ्यात्व मोहनीय २ सम्यक्त्वमोहनीय ३ मिश्रमोहनीय।

आयुष्कर्म की ४ प्रकृति—१ नरक की आयुष २ तिर्यञ्च की आयुष ३ मनुष्य की आयुष ४ देवता की आयुष।

नाम कर्म की ९३ प्रकृति जिसमें ३७ प्रकृति पुण्यतत्त्व में हैं और ३४ प्रकृति पापतत्त्व में। यह ७१ हुई। बाकी २२ प्रकृति इस प्रकार हैं।

५ बन्धन ५ संघातन २० वर्ण गन्ध रस स्पर्श के। इनमें से ८ वर्ण पुण्य और पापतत्त्व में से छोड़ दिये। बाकी रही बाइस। ३७ ३४ और २२ सब मिलकर नाम कर्म की ९३ प्रकृति हुई।

गोत्र कर्म की २ प्रकृति—१ नीचगोत्र २ उच्चगोत्र।

अन्तराय कर्म की ५ प्रकृति—१ दानान्तराय २ लाभान्तराय ३ भोग अन्तराय ४ उपभोग अन्तराय ५ वीर्य अन्तराय। आठों कर्मों की सब मिलकर १४८ प्रकृति हुई।

२ प्रदेशबंध

आठों कर्मों के दल का समूह तथा आत्मा के प्रदेशों के ऊपर आठों कर्मों की अनन्त वर्गणा, अर्थात् एक एक

आयु कर्म के उदय [illegible] की [illegible] ।

दृष्टान्त—[illegible] का लड्डू । सम्पूर्ण लड्डू को ग्रहण करते हैं । लड्डू का एक भाग (टुकड़ा) को ग्रहण करते हैं । और [illegible] को ग्रहण करते हैं । इसी तरह कर्मबन्ध ? पुद्गल (प्रकृति) आठ [illegible] आयगमन है ।

२ स्थितिबन्ध

आठों कर्मों की स्थिति [illegible] अर्थात् १ ज्ञानावरणीय २ दर्शनावरणीय [illegible] इन चारों कर्मों की स्थिति [illegible] कोड़ाकोड़ी सागर की [illegible] ।

मोहनीय कर्म की [illegible] ७० कोड़ाकोड़ी सागर की [illegible] ।

नामकर्म [illegible] की [illegible] २० कोड़ाकोड़ी सागर की [illegible] ।

आयुकर्म की [illegible] ३ सागर की [illegible]

३ अनुभागबन्ध

[illegible]

[illegible]

१ [illegible]

पडिणियाए ३ ज्ञान अन्तराएणं ४ ज्ञान प्रद्वेषेणं ५ ज्ञान अच्चासायणाए ६ नाणविसंवाद जोगेणं ।

ज्ञानावरणीय कर्म १० प्रकार से भोगा जाता है— १ सोयावर्ण २ सोयविन्नाणावर्ण ३ नेत्तावर्ण ४ नेत्तविन्नाणावर्ण ५ घाणावर्ण ६ घाणविन्नाणावर्ण ७ रसावर्ण ८ रसविन्नाणावर्ण ९ फासावर्ण १० फासविन्नाणावर्ण ।

दर्शनावरणीय कर्म का ६ प्रकार से बन्ध पड़ता है— १ दर्शन पडिणियाए २ दर्शननिह्नवणियाए ३ दर्शन अन्तराएणं ४ दर्शन प्रद्वेषेणं ५ दर्शन अच्चासायणाए ६ दर्शनविसंवादजोगेणं ।

२ दर्शनावरणीयकर्म ९ प्रकार से भोगा जाता है— १ चक्षु दर्शनावरणीय २ अचक्षु दर्शनावरणीय ३ अवधि दर्शनावरणीय ४ केवलदर्शनावरणीय ५ निद्रा ६ निद्रा निद्रा ७ प्रचला ८ प्रचला प्रचला ९ स्त्यानर्द्धि निद्रा ।

साता वेदनीय कर्म जीव १० प्रकार से बांधता है—

१ पाणानुकम्पनीयाए २ भूयानुकम्पनीयाए ३ जीवानुकम्पनीयाए ४ सत्तानुकम्पनीयाए ५ अदुःखणियाए ६ असोयणियाए ७ अजूरणियाए ८ अटिप्पणियाए ९ अपिट्टणियाए १० अपरितावणियाए ।

साता वेदनीय कर्म जीव ८ प्रकार से भोगता है—

१ मनोज्ञ शब्द २ मनोज्ञ रूप ३ मनोज्ञ गंध ४ मनोज्ञ रस ५ मनोज्ञ स्पर्श ६ मन को सुखदाई ७ वचन को सुखदाई ८ काया को सुखदाई ।

असातावेदनीय कर्म और १२ प्रकार से बांधते हैं—

१ प्राणभूतजीव सत्त्व इनको दु:ख दियाय २ सोयणि-याय ३ झूरणियाय ४ तिप्प णियाय ५ पिट्टणियाय ६ परिता-पणियाय ७ बहु दु:खणियाय ८ बहुसोयणियाय ९ बहुझुरणि-याय १० बहुतिप्पणियाय ११ बहुपिट्टणियाय १२ बहुपरिता-पणियाय।

असातावेदनीय कर्म ८ प्रकार से भोगते हैं—

१ अमनोगम शब्द २ अमनोगम रूप ३ अमनोगम गन्ध ४ अमनोगम रस ५ अमनोगम स्पर्श ६ मन को दु:ख-दाई ७ वचन को दु:खदाई ८ काया को दु:खदाई।

मोहनीय कर्म ६ प्रकार से बांधता है—

१ तिव्वकोहे २ तिव्वमाने ३ तिव्वमाया ४ तिव्वलोभे ५ तिव्वदर्शनमोहनीय ६ तिव्वचारित्रमोहनी।

मोहनीय कर्म और ५ प्रकार से भोगते हैं—

१ मिथ्यात्व मोहनीय २ मिश्र मोहनीय ३ सम्यक्त्व मोहनीय ४ कषाय मोहनीय ५ नोकषाय मोहनीय।

आयु कर्म १६ प्रकार से बांधा जाता है।

चार प्रकार से नरक की आयुष्य बांधी जाती है—

१ महा आरंभिया २ महापरिग्रहिया ३ कुणय आहारे ४ पंचेन्द्रिय वध।

चार प्रकार से तिर्यञ्च का आयुष्य बांधी जाती है—

१ माया करने से २ माया में माया करने से ३ झूठ

झोल मोल माप करने से ८ अलिक वचन—अपना दोष दूसरों के सिर पर लगाने से अर्थात् झूठ बोलने से ।

चार प्रकार से मनुष्य की आयु बांधी जाती है—

१ प्रकृति भद्रियाए २ प्रकृति विनियाए ३ साणुक्कोसियाए ४ अमच्छरियाए ।

चार प्रकार से देवता की आयु बांधी जाती है—

१ सराग संयम पालने से २ संयमासंयम से ३ बाल तप से ४ अकाम निर्जरा से ।

आयुष्कर्म और ४ प्रकार से भोगा जाता है—

१ नरक गति में २ तिर्यञ्च गति में ३ मनुष्य गति में ४ देवता गति में ।

नाम कर्म आठ प्रकार से बांधा जाता है ।

चार प्रकार से शुभ नाम कर्म बांधा जाता है—

१ काय ऋजुए २ भाव ऋजुए ३ भाषा ऋजुए ४ अविसंवादन योगेन ।

१४ प्रकार से शुभ नाम कर्म भोगा जाता है—

१ इष्ट शब्द २ इष्ट रूप ३ इष्ट गन्ध ४ इष्ट रस ५ इष्ट स्पर्श ६ इष्ट गति ७ इष्ट स्थिति ८ इष्ट लावण्य ९ इष्ट यशोकीर्ति १० इष्ट उत्थान कर्म बलवीर्य पुरुषाकार ११ इष्ट स्वर १२ कान्त स्वर १३ प्रिय स्वर १४ मनोज्ञ स्वर ।

अशुभ नाम कर्म ४ प्रकार से बांधा जाता है—

१ काया अनऋजुए २ भाव अनऋजुए ३ भाषा अनऋजुए ४ विसंवादन योगेन ।

अशुभ नाम जीव १४ प्रकार से भोगते हैं—

१ अनिष्ट शब्द २ अनिष्ट रूप ३ अनिष्ट गन्ध ४ अनिष्ट रस ५ अनिष्ट स्पर्श ६ अनिष्ट गति ७ अनिष्ट स्थिति ८ अनिष्ट लावण्य ९ अयशोकीर्ति १० अनिष्ट उट्ठाण कम्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रमेण ११ अनिष्ट स्वर १२ अकन्त स्वर १३ हीन हीन स्वर १४ अमनोज्ञ स्वर ।

गोत्र कर्म सोलह प्रकार से बांधा जाता है।

आठ प्रकार का मद करने से नीच गोत्र बांधा जाता है—

१ जातिमद २ कुलमद ३ बलमद ४ रूपमद ५ तप मद ६ लाभमद ७ सूत्र (ज्ञान) विद्यामद ८ ऐश्वर्य मद यह आठ मद करने से जीव नीच गोत्र में पैदा होता है।

आठ प्रकार से भोगता है—

१ जाति हीन २ कुल हीन ३ बल हीन ४ रूप हीन ५ तप हीन ६ लाभ हीन ७ सूत्र ज्ञान हीन ८ ऐश्वर्य हीन।

आठ मद न करने से जीव उच्च गोत्र बांधता है—

१ जाति मद न करे २ कुल मद न करे ३ बल मद न करे ४ रूप मद न करे ५ तप मद न करे ६ लाभ मद न करे ७ सूत्र ज्ञान मद न करे ८ ऐश्वर्य मद न करे।

आठ प्रकार से भोगा जाता है—

१ जाति श्रेष्ठ २ कुल श्रेष्ठ ३ बल श्रेष्ठ ४ रूप श्रेष्ठ ५ तप श्रेष्ठ ६ लाभ श्रेष्ठ ७ ज्ञान श्रेष्ठ ८ ऐश्वर्य श्रेष्ठ।

अन्तराय कर्म ५ प्रकार से जीव बांधते हैं—

१ दान अन्तराय २ लाभ अन्तराय ३ भोग अन्तराय

[illegible] क्रिया ५ [illegible]क्रिया ६ [illegible]क्रिया ७ [illegible]क्रिया [illegible] क्रिया ९ [illegible]क्रिया १० [illegible] क्रिया ११ [illegible] क्रिया १२ [illegible] क्रिया १३ [illegible] क्रिया १४ [illegible]क्रिया १५ [illegible] क्रिया [illegible] [illegible] ।

[illegible] के [illegible] हैं—

१ [illegible] ज्ञान [illegible] ३ [illegible] चारित्र ४ [illegible] चारित्र [illegible] ॥४॥

[illegible]

१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] ५ [illegible] ६ [illegible] ७ [illegible] ८ [illegible] [illegible] ।

[illegible] के [illegible] हैं [illegible] की [illegible] की [illegible] की [illegible] की [illegible] की [illegible] की [illegible] की [illegible] की [illegible] की [illegible] ।

[illegible]

१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] ५ [illegible] ।

३ पूइकम्मे (पूति कर्म) निर्दोष आहार में आधाकर्मी की मिलावट होवे वह आहार लेवे तो पूतिकर्म दोष लगे।

४ मिस्सीजाय (मिश्रित) जो गृहस्थ अपने और साधु दोनों के लिये बनावे वह आहार लेवे तो मिश्रित दोष लगे।

५ ठवणा (स्थापना) साधु के ही निमित्त स्थापन करके रखे और पीछे ना देवे यह आहार लेवे तो स्थापना दोष लगता है।

६ पाहुडियाय (प्राभृतिक) अतिथि के निमित्त जो भोजन हो और थोड़ा होने उसे अतिथि को देने से पहले लेवे तो दोष।

७ पाओर (प्रादुष्करण) अंधेरे में दीपक, बैटरी, बिजली आदि का प्रकाश करके देवे ऐसा आहार लेवे तो दोष।

८ कीय (क्रीत) साधु के निमित्त मोल लिया हुआ आहार लेवे तो दोष।

९ पामिचे (अपमित्य) साधु के निमित्त उधारा लिया हो, वह आहार लेवे तो दोष।

१० परियट्टिय (परिवर्तित) साधु के निमित्त अपना आहार देकर अन्य से और किसी प्रकार का आहार लेवे ऐसा आहार को साधु लेवे तो दोष।

११ अभिहड (अभिहृत) साधु के निमित्त सन्मुख रास्ते में या उपाश्रय में आहार लावे उसे लेवे तो दोष।

१२ उद्भिन्ने (उद्भिन्न) लेपन करके बंध किया हुआ खुलवा कर लेवे तो दोष।

१३ मालोहड (मालापहृत) ऊंची नीची तिरछी विषम जगह में रक्खा हुआ आहार लेवे तो दोष क्योंकि दाता को दुःख का कारण है।

१४ अच्छिज्जे (आच्छेद्य) निर्बल से छीन कर दिलावे वह आहार लेवे तो दोष।

१५ अनिसिट्ठे (अनिसृष्ट) दो मनुष्यों का भाग का आहार उन दोनों की मरजी के बिना लेवे तो दोष।

१६ अज्झोयरे (अध्यवपूरक) आहार थोड़ा होने से साधु के निमित्त उसमें और आरम्भ करके मिला कर देवे जैसे—थोड़ी दाल है और उसमें पानी मिला कर अधिक बना दी ऐसे भोजन को लेवे तो दोष।

इति १६ उद्गम दोष समाप्त।

१६ उत्पादना के दोष

धाई दूई निमित्ते आजीव वणीमगे तिगिच्छा य।
कोहे माणे माया लोभे य हवंति दस दोसा ॥३॥
पुव्वि पच्छासंथुवा, विज्जा मंते चुण्ण जोगे।
उप्पायनाए दोसा, सोलसमे मूलकम्मे य ॥४॥

१ धाई (धात्री) धाय माता की तरह किसी के बच्चे को खिला करके आहार लेवे तो दोष।

२ दूई (दूती) दूतपने का काम करके आहार लेवे तो दोष।

३ निमित्ते (निमित्त) भूत भविष्यत वर्तमान आदि निमित्त ज्योतिष बता करके आहार लेवे तो दोष।

८ अपरिणाये (अपरिणत) पूरा शस्त्र परिगम्या बिना अर्थात् अचित्त हुए बिना लेवे तो दोष।

९ लित्त (लिप्त) थोड़े समय की (तत्काल की) लेपन की हुई भूमि पर पा करके आहारादि लेवे तो दोष।

१० छड्डिय (छर्दित) गिरता पड़ता हुआ आहार लेवे तो दोष।

१० एषणा के दोष समाप्त।

५ मांडले के दोष

संजोयणापमाणं, इंगालधूम कारण पढमावसिय बाहिर सरसा ॥६॥

६ कारण से आहार का सेवन करे

वेयणा वेयावच्च इरियट्ठाय संजमट्ठाए।
तहपाणवत्तियाए छट्ठंपुणधम्मचिंताए ॥७॥

६ कारण से आहार का परित्याग करे

आयंके उवसग्गे तितिक्खया बंभचेरगुत्तीसु।
पाणिदया तवहेउ सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥८॥

इति आहार पानी के ४७ दोष समाप्त।

पाच भरत पाच ऐरावत की आरों के प्रमाण। पहला आरा लगते तीन कोस री। पहला उतरते दूसरा लगते दो कोस री। दूसरा उतरते तीसरा लगते एक कोस री। तीसरा उतरते चौथा लगते ५०० धनुष री। चौथा उतरते पाचवा लगते ७ हाथ री। पाचवा उतरते छठा लगते १ हाथ री। छठा उतरते पहला लगते एक हाथ से न्यून री। पहला उतरते दूसरा लगते ७ हाथ री। दूसरा उतरते तीसरा लगते ५०० धनुष री। तीसरा उतरते चौथा लगते एक कोस री। चौथा उतरते पाचवा लगते दो कोस री। पाचवा उतरते छठा लगते तीन कोस री।

तीर्थङ्करां री अवगाहना

१	श्री ऋषभदेव भगवान री		५००	धनुष री
२	श्री अजितनाथ	,,	४५०	,,
३	श्री सम्भवनाथ	,,	४००	,,
४	श्री अभिनन्दन	,,	३५०	,,
५	श्री सुमतिनाथ		३००	,,
६	श्री पद्मप्रभु	,,	२५०	,,
७	श्री सुपार्श्वनाथ	,,	२००	,,
८	श्री चन्द्रप्रभु	,,	१५०	,,
९	श्री सुविधिनाथ	,,	१००	,,
१०	श्री शीतलनाथ	,,	९०	,,
११	श्री श्रेयांसनाथ	,,	८०	,,

९	महापद्म		२०	,,
१०	हरिषेण	,,	१५	,,
११	जयनाम		१२	,,
१२	ब्रह्मदत्त		७	,,

वासुदेवों की अवगाहना

१	त्रिपृष्ठ	की	८०	धनुष की
२	द्विपृष्ठ		७०	,,
३	स्वयंभू	,,	६०	,,
४	पुरुषोत्तम		०	,,
५	पुरुषसिंह		४५	,,
६	पुरुष पुण्डरीक		२९	,,
७	दत्त		२६	,,
८	लक्ष्मण		१६	,,
९	कृष्ण		१०	,,

बलदेवों की अवगाहना

१	अचल	की	८०	धनुष की
२	विजय	,,	७०	,,
३	भद्र	,,	६०	,,
४	सुप्रभ	,,	५०	,,
५	सुदर्शन	,,	४	,,
६	आनन्द	,,	२९	,,
७	नन्दन	,,	२६	,,

१२ पर्याप्ति द्वार

पर्याप्ति छः हैं जो कि पच्चीस बोलों में आ चुके हैं। एकेन्द्रिय में ४ पर्याप्ति होती हैं। जैसे कि १ आहार २ शरीर ३ इन्द्रिय ४ श्वासोश्वास। तीन विकलेन्द्रियों असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में ५ पर्याप्ति हैं। किन्तु मन पर्याप्ति नहीं। और असंज्ञी मनुष्य में चार पर्याप्ति होती हैं। अपितु मन पर्याप्ति और वचन पर्याप्ति नहीं होती। संज्ञी तिर्यञ्च और संज्ञी मनुष्य नारकी और देवताओं में छः पर्याप्ति होती हैं।

१३ दृष्टि द्वार विषय

दृष्टियां तीन हैं—१ सम्यग् २ मिथ्या ३ मिश्र। नारकी, भवनपति, वाणव्यन्तर ज्योतिषी, वैमानिक १२ वें देवलोक पर्यन्त में ३ तीनों होती हैं। नव ग्रैवेयक विमानों में सम्यग् दृष्टि और मिथ्यात्व दृष्टि होती हैं। अपितु पांच अनुत्तर विमानों में एक ही सम्यग् दृष्टि होती है। पांच स्थावर पर्याप्त और अपर्याप्त, तीनों विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय पर्याप्त में एक मिथ्यादृष्टि होती है। असंज्ञी मनुष्य ५६ अन्तर्द्वीपों के युगलियों में भी एक मिथ्यादृष्टि होती है। तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च अपर्याप्त ३ प्रकार के युगलियों में २ दृष्टि होती हैं। जैसे कि सम्यग् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि। संज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय और संज्ञी मनुष्यों में तीन दृष्टि होती हैं। जैसे कि १ सम्यग् २ मिथ्या ३ मिश्र।

५ अन्तरद्वीप युगलियों में दो अज्ञान (१ मति २ श्रुति) ६। सात तिर्यञ्च संज्ञि मनुष्य में तीनों अज्ञान।

१७ योग द्वार विषय

योग १५ हैं। चार मन के—१ सत्य मनोयोग २ असत्य मनोयोग ३ मिश्र मनोयोग ४ व्यवहार मनोयोग। चार वचन के—५ सत्य वचनयोग ६ असत्य वचनयोग ७ मिश्र वचनयोग ८ व्यवहार वचनयोग। सात काया के योग—९ औदारिक १० औदारिक का मिश्र ११ वैक्रिय १२ वैक्रिय का मिश्र १३ आहारिक १४ आहारिक का मिश्र १५ कार्मण योग। नारकी और देवताओं में ११ योग होते हैं। जैसे कि—४ मन के ४ वचन के एवं आठ ९ वैक्रिय १० वैक्रिय का मिश्र ११ और कार्मण योग। पृथ्वी पानी अग्नि वनस्पति और असंज्ञी मनुष्यों में तीन योग होते हैं। जैसे कि—१ औदारिक २ औदारिक का मिश्र ३ कार्मण योग। वायु काय में ५ योग होते हैं। जैसे कि १ औदारिक २ औदारिक का मिश्र ३ वैक्रिय ४ वैक्रिय का मिश्र ५ कार्मण योग। तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में ४ योग होते हैं। १ औदारिक २ औदारिक का मिश्र ३ कार्मण ४ व्यवहार। संज्ञी तिर्यञ्च और मनुष्यों में १३ योग होते हैं। जैसे कि—४ मन के ४ वचन के एवं आठ ९ औदारिक, औदारिक का मिश्र १० वैक्रिय ११ वैक्रिय का मिश्र १२ कार्मण योग १३। किन्तु संज्ञी मनुष्य में १५ ही योग होते हैं।

१८ उपयोग द्वार विषय

उपयोग १२ हैं। जैसे कि— पांच ज्ञान, तीन अज्ञान चार दर्शन। एवं १२। नारकी, भवनपति वाणव्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक ११वें देवलोक पर्यन्त ९ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान (मति, श्रुत, अवधि) तीन अज्ञान, तीन दर्शन (चक्षु अचक्षु, अवधि) एवं ९। पांच अनुत्तर विमानों में ६ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान (मति, श्रुत अवधि) तीन दर्शन (चक्षु अचक्षु अवधि) एवं ६। पांच स्थावर—असंज्ञी मनुष्य, पर्याप्त, अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय, पर्याप्त इनमें ३ उपयोग होते हैं। जैसे कि—१ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ अचक्षुदर्शन। द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय अपर्याप्त में ५ उपयोग होते हैं। १ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ मतिअज्ञान ४ श्रुतअज्ञान ५ अचक्षुदर्शन। एवं ५। चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय पर्याप्त में ४ उपयोग होते हैं। जैसे कि—१ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ चक्षुदर्शन ४ अचक्षुदर्शन एवं ४। मनुष्य पर्याप्त अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च। पंचेन्द्रिय में ६ उपयोग होते हैं। जैसे कि—१ मति ज्ञान २ श्रुत ज्ञान ३ मति अज्ञान ४ श्रुत अज्ञान ५ चक्षुदर्शन ६ अचक्षुदर्शन। संज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में ९ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान, तीन अज्ञान तीन दर्शन (चक्षु, अचक्षु, अवधि)। एवं ९। संज्ञी मनुष्य में १२ उपयोग होते हैं।

१८ उपयोग द्वार विषय

उपयोग १२ हैं। जैसे कि— पांच ज्ञान, तीन अज्ञान, चार दर्शन। एवं १२। नारकी, भवनपति वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक २१वें देवलोक पर्यन्त ९ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान (मति, श्रुत, अवधि) तीन अज्ञान तीन दर्शन (चक्षु, अचक्षु, अवधि) एवं ९। पांच अनुत्तर विमानों में ६ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान (मति, श्रुत अवधि) तीन दर्शन (चक्षु अचक्षु अवधि) एवं ६। पांच स्थावर- असंज्ञी मनुष्य, पर्याप्त, अपर्याप्त द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय पर्याप्त इनमें ३ उपयोग होते हैं। जैसे कि—१ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ अचक्षुदर्शन। द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय अपर्याप्त में ५ उपयोग होते हैं। १ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ मतिअज्ञान ४ श्रुतअज्ञान ५ अचक्षुदर्शन। एवं ५। चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त में ४ उपयोग होते हैं। जैसे कि—१ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ चक्षुदर्शन ४ अचक्षुदर्शन एवं ४। चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त चतुरिन्द्रिय असंज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में ६ उपयोग होते हैं। जैसे कि—१ मति ज्ञान २ श्रुत ज्ञान ३ मति अज्ञान ४ श्रुत अज्ञान ५ चक्षुदर्शन ६ अचक्षुदर्शन। संज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में ९ उपयोग होते हैं। तीन ज्ञान तीन अज्ञान तीन दर्शन (चक्षु, अचक्षु अवधि)। एवं ९। संज्ञी मनुष्य में १२ उपयोग होते हैं।

मनुष्य पंचेन्द्रिय। असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में जीव पूर्वोक्त १० दण्डकों से आकर उत्पन्न होते हैं। संज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में जीव २४ दण्डकों से आकर उत्पन्न होते हैं। असंज्ञी मनुष्य में जीव ८ दण्डकों से आकर उत्पन्न होते हैं। जैसे कि—पृथ्वी, पानी, वनस्पति, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, मनुष्य पंचेन्द्रिय। संज्ञी मनुष्य में जीव तेउ, वायु काय वर्ज के शेष २२ दण्डकों से आ उत्पन्न होता है।

२१ आयु द्वार विषय

पहले नरक के नारकियों की आयु जघन्य १० हजार वर्ष की, उत्कृष्ट स्थिति एक सागर की। प्रस्तर (पाथड़) ११ हैं। पहले प्रस्तर की जघन्य १० हजार की उत्कृष्ट ९० हजार वर्ष की, दूसरे प्रस्तर की जघन्य ९० हजार वर्ष की उत्कृष्ट स्थिति ९० लाख वर्ष की तीसरे प्रस्तर की जघन्य ९० लाख की उत्कृष्ट स्थिति असंख्य पूर्व की है। इसके आगे ८ प्रस्तर और हैं। किन्तु एक सागर के दस भाग करके प्रति प्रस्तर एक एक भाग बढ़ा लेना चाहिए। जैसे कि—चौथे प्रस्तर की जघन्य स्थिति १ पूर्व की उत्कृष्ट दस भाग में एक भाग की है।

पांचवें प्रस्तर की जघन्य एक भाग की	उत्कृष्ट	दो भाग की
छठे	२	३
सातवें	३ ,	४ ,

भाग, उत्कृष्ट अर्द्ध पल्योपम ५०० वर्ष की। ग्रह विमान वासी देवों की स्थिति—जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग, उत्कृष्ट एक पल्योपम की। उनकी देवियों का जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग, उत्कृष्ट अर्ध पल्योपम की। नक्षत्र विमान वासी देवों की स्थिति—जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग, उत्कृष्ट अर्ध पल्योपम की। उनकी देवियों की जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग उत्कृष्ट अर्द्ध पल्योपम से कुछ अधिक। तारा विमानवासी देवों की स्थिति—जघन्य पल्योपम का आठवाँ भाग उत्कृष्ट पल्योपम के चतुर्थ भाग की। उनकी देवियों की जघन्य पल्योपम का आठवाँ भाग उत्कृष्ट आठवें भाग से कुछ अधिक।

वैमानिक देवों की स्थिति

पहले देवलोक के देवों की स्थिति—जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट दो सागरोपम की। उनकी देवियों की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की। अपरिगृहीता देवियों की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट ५० पल्योपम की। दूसरे देवलोक के देवों की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक उत्कृष्ट दो सागरोपम से कुछ अधिक। उनकी देवियों की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक। उत्कृष्ट नव पल्योपम से कुछ अधिक। अपरिगृहीता देवियों की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक, उत्कृष्ट ५५ पल्योपम की।

५ भरत, ५ एरावत के तीसरे आरे उतरते हुए चौथे आरे के लगते हुए और ५ महाविदेह के मनुष्यों की आयु जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट करोड़ पूर्व की।

५ भरत, ५ ऐरावत के चतुर्थ आरे के उतरते हुए पाँचवे आरे के लगते हुए मनुष्यों की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट १२ वर्ष की।

पाँचवे आरे उतरते हुए छठे आरे के लगते हुए ५ भरत, ५ ऐरावत के मनुष्यों की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट १० वर्ष की छठे आरे उतरते हुए १६ वर्ष की। इसी प्रकार उत्सर्पिणी काल की स्थिति जाननी चाहिये। ५६ अन्तर्द्वीपों के युगलिये मनुष्यों की जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग में कुछ न्यून उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण।

तीर्थंकरों की स्थिति विषय

१	श्री ऋषभदेव भगवान की	८४ लाख पूर्व की
२	श्री अजितनाथ ,,	७२ ,,
३	श्री सम्भवनाथ ,,	६०
४	,, अभिनन्दन	५०
५	सुमतिनाथ	४० ,,
६	,, पद्मप्रभु	३०
७	सुपार्श्वनाथ	२०
८	[illegible]	[illegible]

दृष्मान्त द व

		हजार वर्ष की
६	कुंथुनाथ	७
७	अरनाथ	
८	सम्भूम	३
९	महापद्म	१ ,,
१०	हरिषण	
११	जयनाम	३० वर्ष की
१२	ब्रह्मदत्त	

वासुदेवों की स्थिति विषय

		८४ लक्ष वर्ष की
१	त्रिपृष्ठ वासुदेव की	७
२	द्विपृष्ठ	६० ,,
३	स्वयंभू	३०
४	पुरुषोत्तम	१० ,,
५	पुरुषसिंह ,,	६ हजार वर्ष की
६	पुंडरीक ,,	५६ ,,
७	दत्त	१ ,,
८	लक्ष्मण	१ ,,
९	कृष्ण	

बलदेवों की स्थिति विषय

	अचल बलदेव की	८५ लक्ष वर्ष की
१	विजय ,,	७५ ,,
२	भद्र ,, ,,	६५ ,,
३	सुप्रभ ,, ,,	५५ ,,
४		

२३ च्यवन द्वार

जिस प्रकार उत्पात द्वार का वर्णन किया गया है उसी प्रकार च्यवन द्वार का भी स्वरूप जानना चाहिये।

२४ गतागति द्वार विषय

पहले नरक की २५ आगति–१५ कर्मभूमि के मनुष्य ५ संज्ञी तिर्यञ्च ५ असंज्ञी तिर्यञ्च। एवं २५ [२० की गति कर्मभूमि के मनुष्य ५ संज्ञी तिर्यञ्च] दूसरे नरक की २० आगति–१५ कर्मभूमि के मनुष्य ५ संज्ञी तिर्यञ्च २० की २० गति १५ कर्मभूमि के मनुष्य ५ संज्ञी तिर्यञ्च। तीसरे नरक की २० आगति और गति १९ की है। किन्तु एक भुजपुर टल गया। चौथे नरक की १८ की आगति (उरपुर टल गया) गति वही २० की। पाचवे नरक की १७ की आगति (स्थलचर टल गया) गति २० की। छठे नरक की १६ की आगति (उरपुर टल गया) गति वही २० की। सातवें नरक की १६ की आगति १५ कर्मभूमि के मनुष्य एक जलचर पुरुष–स्त्री नहीं जाति। गति ५ संज्ञी तिर्यञ्च की।

भवनपति वाणव्यन्तर की आगति १११ की ५६ अन्तर द्वीपों के युगलिय १५ कर्मभूमिय मनुष्य ३० अकर्मभूमिय मनुष्य, ५ संज्ञी तिर्यञ्च ५ असंज्ञी तिर्यञ्च एवं सब १११।

गति २३ की १५ कर्मभूमियें मनुष्य, ५ संज्ञी तिर्यञ्च, १ पृथ्वी २ पानी ३ वनस्पति एवं २३। ज्योतिषी तथा

प्रकार के देवता ७ नरक, ८६ प्रकार के युगलिय १७१ का थोकडा एव सब ३६३ हुए।

गति २६८ की—९९ प्रकार के देवता ६ नरक १५ कर्म भूमिये मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च यह सब १७५ बोल हुए।

१७ अपर्याप्त और १ ५ पर्याप्त एव २५० हुए।

तीनों विकलेन्द्रियों का अपर्याप्त ५ असज्ञी तिर्यञ्च का अपर्याप्त एव ८ यह सब २५८ हुए।

मिथ्यादृष्टि की—आगति ३६६ की ९४ प्रकार के देवता ५ अनुत्तर विमानों के देवता टल गए। ७ नरक ८६ प्रकार के युगलिय।

५ हेमवय ५ हरणवय ५ हरिवय ५ रम्यकवय ५ देव कुरु ५ उत्तरकुरु ५६ अन्तर्द्वीपा के युगलिय एव ८६। १७९ का थोकडा एव सब ३६६ हुए।

गति ५३ की—जीव के ५६३ भेदों में से ५ अनुत्तर विमान टल गए। ५ पर्याप्त ५ अपर्याप्त एव १० टले। शेष ५५३ रहे। इनके स्थानों में मिथ्यादृष्टि काल करके जाता है। प्रतिवासुदेव की आगति २७१ की, १७१ का थोकडा जैसे कि—९४ प्रकार के देवता ६ नरक। गति अधोलोक की, पुरुषवेद की आगति ३७१ की, ९९ प्रकार के देवता ७ नरक, ८६ प्रकार के युगलिये १७९ का थोकड़ा। गति ५६३ की, स्त्री वेद की आगति ३७१ की ९९ प्रकार के

२६ योग द्वार विषय

योग तीन हैं—१ मन २ वचन ३ काय। नारकीय और देवताओं में ३ योग होते हैं। परन्तु विशेष इतना ही है कि देवता के मन और वचन के योग एक ही समय उत्पन्न होते हैं।

५ स्थावरों में एक ही काय का योग होता है और तीनों विकलेन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में २ योग [१ वचन २ काय] होते हैं।

असंज्ञी मनुष्य में एक काय का ही योग होता है किन्तु संज्ञी तिर्यञ्च और संज्ञी मनुष्यों के तीनों योग ही होते हैं।

इति षट्‌विंशति द्वार समाप्त।

१ नाम द्वार

सुधर्म चार सर्वार्थसिद्ध तक २६ देवलोकों के नाम।

२ संस्थान द्वार

१, २, ३, ४, ९, १०, ११, १२ अर्ध चन्द्रमा के संस्थान। ५, ६, ७, ८ और नवग्रैवेयक सर्वार्थसिद्ध यह पूर्णमासी के चन्द्रमा जैसा संस्थान। चार अनुत्तर विमान सिंघाड़े जैसा संस्थान।

३ पस्तड़ द्वार

पहले दूसरे देवलोक में	१३	पस्तड़ हैं।
तीसरे चौथे ,,	१२	,,
पांचवें ,,	६	,,
छठे	५	,,
सातवें से बारहवें ,,	तक चार चार	
नव नवग्रैवेयक में	९	पस्तड़ हैं।
पांच अनुत्तर विमानों में	१	,,

४ विमान द्वार

पहले देवलोक में	३२	लाख विमान हैं।
दूसरे ,,	२८	,,
तीसरे ,,	१२	,,
चौथे ,,	८	,,
पांचवें ,,	४	,,

तामसी त्रिक में ३९ ,,
पाच अनुत्तर विमानों म ५ पंक्ति बंध।

६ संख्यातासंख्याता द्वार

सब विमानों को ५ भाग म बाटा गया है जिसम ४ भाग मो असंख्यात योजनों के विमान असंख्याते देवता रहते हैं। एक भाग म संख्यात योजनों के विमान संख्यात देवता रहते हैं।

७ राजु द्वार

सुमेरु गिरि के पास समभूमि म ७९० योजन ऊपर तारा मण्डल है। तारा मण्डल से १० योजन ऊपर सूर्य विमान है। सूर्य विमान से ८० योजन ऊपर चन्द्रमा का विमान है। चन्द्रमा के विमान से ४ योजन ऊपर २८ नक्षत्रों के विमान हैं। नक्षत्रों स ४ योजन ऊपर बुद्ध का विमान है। बुद्ध से ३ योजन ऊपर शुक्र का विमान है। शुक्र से ३ योजन ऊपर बृहस्पति का विमान है।

बृहस्पति से , मंगल ,,
मंगल से , शनैश्चर , ,,
समभूमि से ऊपर १½ (डेढ़) राजु पहला दूसरा देव लोक है।
,, ,, १ , तीसरा चौथा ,, ,,
,, ½ (पौना) पाचवा छठा ,,
,, ,, ½ (पाव) सातवा आठवा ,, ,,
,, , १ , नवमा, दसवा ग्यारहवा, बारहवा

उसमें ऊपर [illegible] ग्राम और विमानों का [illegible] [illegible] आकार [illegible] हैं [illegible] सिद्ध [illegible] मुक्त शिला प्रस्या है [इसी प्रकार]

राजु का प्रमाण

राजु का प्रमाण—[illegible] दूसरे देवलोक में [illegible] लोहे का गोला बनाया जावे। उस गोले को [illegible] जावे। तो छः मास छः दिन [illegible] समय इतने काल में जितनी दूर जावे उसको एक राजु का प्रमाण कहते हैं। अथवा असंख्यात योजनों का एक राजु है।

नोट—ज्योतिषी चक्र ११० योजन में है।

८ आधार द्वार

पहला दूसरा देवलोक घनोदधि के आधार से है।

३, ४, ५ „ घनवाय

६, ७, ८ „ दोनों

९वें से २६वें तक जितने विमान हैं, सब के सब हल्के भार परमाणुओं की परस्पर की कशिश से आकाश पर ही स्थित हैं।

९ महलात द्वार

पहले दूसरे देवलोक में		५००	योजन ऊँचे	महल हैं।
३, ४	„	६००	„	„
५, ६	„	७००	„	„

/ /

१० ११ १२ ०

९ नवग्रैवेयक म १ हजार योजन ऊंचा। अनुत्तर विमानों

११०० ग्यारह सौ ऊंच महल है।

१० अगनाई द्वार

पहले दूसरे देवलोक मे ४७ योजन की अगनाई।

३, ४	३६००	
५, ६	०	,
७, ८	४५०	,,
९ १० ११ १२	४२००	,,
नव नवग्रैवेयक	४००	,
५ अनुत्तर विमाना	३१०	,,

११ वर्ण द्वार

पहले दूसरे देवलोक म पाचों वर्णों के विमान जवाहरात के होते हैं।

३, ४		४		[काला नही]
५, ६	,	३	,	[नीला नही]
७ ८	,	२	,	[लाल नही]

९ से लेकर सर्वार्थ सिद्ध तक एक ही वर्ण श्वेत।

१२ चिह्न द्वार

मुकुटों के चिह्न।

पहले देवलोक के इन्द्र के मुर्गे का चिह्न।

दूसरे ,, ,, भैंसे ,, ,,

..., १२ ०० ।
नौवें दसवें देवलोक के इन्द्र के ८ ०० आत्मरक्षक देवता
ग्यारहवें बारहवें ,, ४०००० , ,

१५ लोकपाल द्वार

पहले देवलोक के इन्द्र के ४ लोकपाल ।

दूसरे से लेकर आठवें तक चार चार ही लोकपाल हैं ।

नव १०वें के ४ लोकपाल हैं

११वें बारहवें ,, ४

१६ तेत्तीस द्वार

एक एक इन्द्र के ३३-३३ देवता माता पिता तुल्य गुरु स्थान है । इन पर इन्द्र का हुक्म नहीं ।

१७ अनिका द्वार

पहले देवलोक के इन्द्र के ७ अनिका ।

[हाथी, घोड़, रथ, पैदल, नाटक गन्धर्व वृषभ की एक लाख २ अनिका]

पहले देवलोक के इन्द्र के १ करोड़ ६ लाख ६८ हजार ।

ॐ

[illegible]

[illegible] परिग्रह द्वार

[illegible] परिग्रह ।

[illegible] की परिग्रह [illegible] की परिग्रह [illegible] की परिग्रह ।

[illegible] हजार की [illegible] हजार की [illegible] हजार की परिग्रह

[illegible]

ग्यारहवें बारहवें १२५ २८ ५०

१९ अग्रमहिषी द्वार

पहले इन्द्र की ८ अग्रमहिषियां।

एक अग्रमहिषी का १६ हजार देवियों का परिवार है। तो कुल परिवार आठों का १२८००० है।

यह एक देवी वैक्रिय करे तो १६००० देवी हुई। इस प्रकार इन्द्र का सब परिवार ४८ ००००० देवियों का है।

दूसरे इन्द्र का भी ऐसे समझ लेना।

२० परिचारणा द्वार

पहिले दूसरे देवलोक में मनुष्यवत् सहवास।

तीसरे चौथे	स्पर्श मात्र
पांचवें छठे	रूप अवलोकन से तृप्ति।
७वें ८वें	शब्द मात्र ,,
९वें १०वें ११वें १२वें	मन

२१ विमाननाम द्वार

पहिले देवलोक में पालक नामक विमान।

दूसरे	पुष्पक
तीसरे	सौमनस
चौथे	श्रीवत्स
पांचवें	नन्द

ऊँचे	गाम
मानव	चिह्न
आम्य ५ २०३	मुनिमन
११व १०३	मननाभ

२२ जावन आवन अर्थात् जान आन का द्वार

पहिली नरक तक चारों प्रकार के देवता जा सकते हैं।
दूसरी " (ज्योतिषी टले)
तीसरी " (वाणव्यन्तर टले)
चौथी से सातवीं तक केवल वैमानिक देवता जा सकते हैं।

२३ ज्ञान द्वार

१६ वाणव्यन्तर ५ नवनिकाय ज्योतिषी यह ऊपर को २५ योजन और नीचे ५ योजन तक देख सकते हैं और तिरछा संख्यात द्वीप समुद्र देख सकते हैं। भवनपतियों के चमरेन्द्र, बलेन्द्र ऊपर को पहले दूसरे देवलोक तक देखते हैं। नीचे पहले नरक का चरमान्त तिरछा असंख्याते द्वीप समुद्र देख सकता है। पहले दूसरे देवलोक वाले देखते ऊपर अपने विमान की ध्वजा पताका तक। नीचे पहली नरक के चरमान्त तक तिरछा असंख्यात द्वीप समुद्र तक देख सकते हैं। तीसरे चौथे देवलोक के देवता ऊपर ध्वजा पताका तक, नीचे दूसरी नरक का चरमान्त, तिरछा असंख्याते द्वीप समुद्र तक देख सकते हैं।

७वें ८वें वाला ऊपर आपणी ध्वजा पताका नव नीचे तीसरी
नरक का चरमान्त तिरछे असंख्यात द्वीप समुद्र नव ।
७वें ८वें चौथी
नरक का चरमान्त तिरछे असंख्यात द्वीप समुद्र नव
९वें १०वें ११वें १२वें पांचवीं

नव ग्रैवेयक मांय में पहले दूसरे त्रिक वाला ऊपर ध्वजापताका नव नीचे छट्ठी नरक का चरमान्त तिरछे असंख्यात द्वीप समुद्र नव ।

नव ग्रैवेयक में तीसरी त्रिक वाला ऊपर ध्वजापताका नव नीचे सातवीं नरक का चरमान्त तिरछे असंख्यात द्वीप समुद्र नव ।

पांच अनुत्तर विमान का देवता कुछ ऊणा सम्पूर्ण लोक नाल देखता है ।

५४ [illegible] द्वार

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

चौथे	७	[कुछ अधिक]
पाचवे	८	
छठे	९	[कुछ अधिक]
सातवे	१६	
८वे	१७	[कुछ अधिक]
९वे १०वे	३४	
११वे १२वे	३४	[कुछ अधिक]

वैक्रिय की गति में भी इन की इतनी गति होती है।

७५ पुण्य द्वार

वाणव्यन्तर १०० वर्ष में जितना पुण्य भोगते हैं। ज्योतिषी २०० वर्ष में उतना भोगते हैं। उनका इन्द्र ३०० वर्ष पीछे उतना पुण्य भोगता है।

भवनपति ४०० वर्ष में इतना पुण्य भोगते हैं। उनके इन्द्र ५०० वर्ष में जितना पुण्य भोगते हैं।

पहले, दूसरे देवलोक वाले	१००० वर्ष	,,	,,	,,
तीसरे, चौथे	२०००	,,	,,	,,
पाचवें, छठे	३०००	,,	,,	,,
७वें, ८वें	४०००	,,	,,	,,
९वें, १०वें, ११वें, १२वें,	५०००	,,	,,	,,
नवग्रैवेयकमें पहली त्रिकवाले	१०००००	,,	,,	,,
,, दूसरी	२०००००	,,	,,	,,

, तीसरी ३००००० ,, , ,,

४ अनुत्तर विमानों वाले ४००००० ,, ,, ,,

सर्वार्थसिद्ध वाले ५००००० ,, ,, ,

२६ परिगृहीत अपरिगृहीत द्वार

पहले देवलोक वाले देवता जघन्य एक पल की आयुवाली देवी भोगते हैं।

उत्कृष्ट ७ पल्य की देवी

दूसरे , , एक पल्यसे अधिक ,,

उत्कृष्ट ९ पल्य की देवी

तीसरे , , ७ ,,

उत्कृष्ट १० पल्य की देवी

चौथे १० , ,

उत्कृष्ट १५ पल्य की देवी

पांचवें , १५ , ,

उत्कृष्ट २० पल्य की देवी

छठे २० ,

उत्कृष्ट २५ पल्य की देवी ,

सातवें वाले जघन्य २५ पल्य की। उत्कृष्ट ३० पल्य की।

आठवें ३० ३५ ,

नौवें , ३५ ४०

दसवें , ४० , ४५ ,

दूसरी पृथ्वी का १३२०० योजन मोटा दल है। उसमें एक हजार नीचे एक हजार ऊपर छोड़कर मध्य १३०००० योजन की पोलाड़ में ११ पाथड़ (मंजल) और २५ लाख नरक के वास हैं।

तीसरी पृथ्वी का १२८००० योजन मोटा दल है। जिसमें एक हजार योजन नीचे एक हजार ऊपर छोड़कर मध्य १२६००० योजन की पोलाड़ में ९ पाथड़ और १५ लाख नरक के वास हैं।

चौथी पृथ्वी का १२०००० योजन मोटा दल है। एक हजार योजन नीचे, एक हजार ऊपर छोड़कर मध्य ११८००० योजन की पोलाड़ में ७ पाथड़ और १० लाख नरक के वास हैं।

पांचवी पृथ्वी का ११८००० योजन मोटा दल है। एक हजार ऊपर एक हजार नीचे छोड़कर मध्य ११६००० योजन की पोलाड़ में ५ पाथड़ और ३ लाख नरक के वास हैं।

एक पाथड़ा तीन २ हजार योजन का मोटा है।

नोट—पहली पृथ्वी के ३ भाग हैं।

१ खर (कठिन) भाग। १६००० योजन मोटा।

२ पङ्क भाग। ८४००० ,, ,,

३ अबबहुल (जलबहुल) भाग। ८०००० ,,

सब सब १८०००० योजन हुए।

पाथड़ा का अन्तर

ली नरक के १३ पाथड़ और १२ अन्तर । एक
अन्तर ११५८३ योजन एक भाग का है ।
सरी के ११ पाथड़ १० अन्तर । एक एक का ४७००
योजन का अन्तर ।
तीसरी ,, ९ ,, ८ ,, ,, १२३७५ ,, ।
चौथी , ७ , ६ ,, ,, १४१६६ ,, ।
पाचवीं , ५ ,, ४ ,, २५०० ,, ।
छठी ,, ३ , २ ,, ५२५०० ,, ।
सातवीं ,, १ अन्तर नहीं ।

श्रेणी बन्ध

पहली नरक में २००५५६७ पुष्पावकर्ण वास ।
और ४४३३ पंक्ति बन्ध ।
दूसरी ,, , २४९७३०५ ,, ,,
और २६९५ पंक्ति बन्ध ।
तीसरी ,, , १४९८५१५ ,,
और १४८५ पंक्ति बन्ध ।
चौथी , ,, ९९९२९३ ,, ,,
और ७०७ पंक्ति बन्ध ।
पाचवीं ,, ,, २९९७३५ ,, ,,
और २६५ पंक्ति बन्ध ।

जैन धर्म के मुख्य नियम

१ लोक अनादि, अनन्त, अकृत्रिम है। चेतन अचेतन आदि इन ६ द्रव्यों से भरा हुआ है।

जीव द्रव्य अनन्तानन्त भिन्न हैं (१) अजीव द्रव्य रूपी तथा अरूपी रूपी पुद्गल अनन्त (२) बाकी चार अरूपी–धर्मास्तिकाय (३) अधर्मास्तिकाय (४) आकाशास्तिकाय (५) काल द्रव्य (६) उप (७) क्रम से चलन, स्थिर अवकाश और परिवर्तन स्वभाव हैं। इन गुणों से युक्त हैं। विशेष विवरण तत्त्वार्थ में देखें।

२ परमात्मा सर्वज्ञानानन्द अनन्तज्ञानी अरूपी जिसका ज्ञान सर्वव्यापक है, अयोनि, अजर अमर, निराकार निरञ्जन निर्लिप्त निर्विकार निर्भय, सकल सर्वदर्शी अनन्त शक्तिमान नित्य अक्षय, अरूप अनन्त, अक्षय, अव्यय, सिद्ध बुद्ध मुक्त इत्यादि गुणों के धारक परमात्मा को अनादि मानते हैं।

३ संसारी जीव—जो पुद्गलमय स्थूल रूप कर्मों के शरीर में प्रवेश कर हुए अनादि से भिन्न २ शरीर, कर्मों के कारण अशुद्ध और अज्ञान हैं। पर स्वभाव से विमल है। हर एक संसारी जीव सम्यक्त्व से अपने अशुद्ध कर्मों द्वारा बद्ध बन्धन है। फिर कर्मों के बन्धन इन्द्रियों से

ईर्या समिति [भाल शोध कर चलना] १ भाषा समिति [विचार कर बोलना] २ एषणा स० [निर्दोष आहार पानी लेना] ३ आयाणभण्डमत्त निक्षेपणा स० [अत्यंत वस्तु के रखने उठाने में संयम] ४ परिठावणिया स० [गिराने में संयम] ५ मन को असंयम से रोक कर संयम में लगाना ६ ७ वचन को असंयम से रोक कर संयम में लगाना ८ काया को असंयम से रोक कर संयम में लगाना एवं १३ शुभ चारित्र के धारने वाले को गुरु मानते हैं।

६ धर्म—मन वचन काया से स्वयं किसी प्राणी को कष्ट नहीं देना। अन्य से दिलाना नहीं। किसी प्राणी को कष्ट देनेवाले की अनुमोदना नहीं करनी। इस पूर्ण अहिंसा व्रत को तो महात्मा ही पाल सकते हैं। और सर्वसाधारण गृहस्थ के लिए यथाशक्ति धर्म पालन के अनेक दर्जे हैं। जिन में चक्रवर्ती से लेकर रंक पर्यन्त सब ही नियत अंश में धर्म पाल सकते हैं। उतने अंश को अहिंसा बाकी को हिंसा कहते हैं।

७ शास्त्र—[सिद्धान्त] देव, अरिहन्त [आप्त], सर्वज्ञ द्वारा कथित शास्त्र को प्रामाणिक मानते हैं। जिसके कथन में पुनर्दोष, अविचार आदि दोष न हों। परस्पर विरोध न हो। प्राणिमात्र को हितकारक हो। किसी को हित और किसी को अहितकारी न हो। सब से समविभाग का सूचक

कुगुरु कुदेव, कुधर्म, कुशास्त्र, कुरूढ़ि आदि से हटा कर सुगुरु, सुदेव, सुधर्म सुशास्त्र सम्यक्त्व, तप नियम संयम, स्वाध्याय, शुभध्यान सत्य सन्तोष आदि शुभ गुणों में प्रवृत्ति कराना। प्राणिमात्र से मैत्री भाव गुण ग्रहण, करुणा, माध्यस्थ भाव, अन्याय को छोड़ना न्याय में प्रवृत्त होना आदि गुणों में लगाना। और साधु साध्वी श्रावक, श्राविका, चार तीर्थ रूपी संघ का परस्पर मेल करा कर धर्म प्रीति और प्रेम में वृद्धि करना। कुमार्ग त्यागना सुमार्ग में प्रवृत्त होना सर्वज्ञ प्रणीत सिद्धान्त को प्राणिमात्र के कानों तक पहुँचाना। दान शील तप भावना आदि में प्रवृत्त होने को धर्म चर्चा कहते हैं जिसमें सात कुव्यसनों का त्यागना भी है।

१. परोपकार

स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे परोपकारी जग के दुःख समूह को हरते हैं॥

अपने स्वार्थ को त्याग कर दुखियों के हित साधन में लगे रहने का नाम परोपकार है। भूखे अन्न, प्यासे [illegible] अनाथ अपाहिजों की रक्षा निराश्रितों को आश्रय देना धन से [illegible] दुखी को [illegible] करना [illegible] [illegible] के लिए [illegible] [illegible] करना। [illegible] मनुष्य [illegible] का [illegible] है। [illegible] धन से सेवा करना। [illegible] से मनुष्य का

५	नाम	अमूर्त्त रूप अर्थात् [illegible] निरञ्जन निराकारता।
६	गोत्र	अगुरु लघु अर्थात् [illegible] हल्का भारीपन का अभाव।
७	अन्तराय	अनन्तवीर्य [illegible] गुण।
८	आयुष्य	अक्षय स्थिति।

इन आठ गुणों के प्रकट होने [illegible] सिद्ध [illegible] आत्मा [illegible] अनन्त [illegible] अवस्था [illegible] होकर [illegible] गुण [illegible] हो जाती है। फिर [illegible] कभी नहीं [illegible]।

[illegible]—[illegible] प्रादुर्भवन्ति [illegible]।
[illegible] दग्धे न [illegible] ॥

गुणस्थान

[illegible] (गुणस्थान) [illegible] हैं। [illegible] गुणों का [illegible] है।

१ मिथ्यात्व गुणस्थान—[illegible]। [illegible] है।

२ सास्वादन गुणस्थान—[illegible]

एक भव उत्कृष्ट ७ तथा ८ भव में मोक्ष प्राप्त करता है।

७ अप्रमादि गु०—मद १ विषय २ कषाय ३ विकथा ४ निद्रा ५ इन पाचों प्रमादों को छोड़ना है। जघन्य उसी भव में मध्यम ३ भव उत्कृष्ट ७ तथा ८ भव में मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

८ नियट्ट बादर गु०—अपूर्व करण, गुणस्थान, आवे। यहा से श्रेणी करता है। उपशम (पडिवाइ) क्षपक (अपडिवाइ)।

९ अनियट्ट बादर गु०—इक्कीस प्रकृतियां उपशमाता है। १५ पहिली हास्य १ रति २ अरति ३ भय ४ शोक ५ दुगन्छा ६ एवं २१।

१० सूक्ष्म सम्पराय गु०—२७ प्रकृति उपशमाता है। २१ पहली, स्त्रीवेद १ पुरुष वेद २ नपुंसक वेद ३ संज्वलन का क्रोध ४ मान ५ माया ६ एवं २७।

११ उपशान्त मोहनीय गु०—यहा २८ प्रकृतियां उपशमाता है। २७ पहिली एक संज्वलन का लोभ एवं २८। यहा पर काल कर तो अनुत्तर विमान में जावे। यदि संज्व लन का लोभ उदय हो जावे तो पीछे गिर कर दसवें नववें या पहले गुणस्थान में आ जावे।

क्षपक श्रेणी २१ प्रकृतियां क्षय करे। तब जीव नववें अनियट्ट बादर गुणस्थान में आता है। २७ क्षय कर तब दसवें सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान में आता है।

२ गु० की स्थिति—जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ आव लिका ७ समय की।

३ गु० की स्थिति—जघन्य उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त की।

४ गु० की स्थिति—जघन्य अन्तमुहूर्त की उत्कृष्ट साधिक ६६ सागर की। चार भव १२ देवलोक के २२—२२ सागर के अथवा ३३—३ सागर के ४ भव अनुत्तर विमानों के। मनुष्य भव में अधिक।

५ गु० की स्थिति—५ ६ ११ गुणस्थान की स्थिति जघन्य अन्तमुहूर्त की उत्कृष्ट देशऊण पूर्व क्रोड़ की।

७ वें से १२वें गुणस्थान तक की स्थिति—जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त की।

१२ वें गु० की स्थिति—जघन्य उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त की।

१४ गु० की स्थिति—५ लघु अक्षर उच्चारण काल की।

क्रिया

१ ३ गु० में २४ क्रिया इरियावहि नहीं।

२ ४ ,, २३ क्रिया मिथ्या नहीं।

५ २२ ,, ,, अव्रति नहीं।

६ ,, ,, २ आरम्भिया मायावत्तिया।

७ से १० तक १ क्रिया मायावत्तिया।

११ १२ १३ में १ क्रिया इरियावहि।

१४ वें गुणस्थान में क्रिया नहीं।

२ गु० की स्थिति—जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ आवलिका ७ समय की।

३ गु० की स्थिति—जघन्य उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त की।

४ गु० की स्थिति—जघन्य अन्तमुहूर्त की उत्कृष्ट साधिक ६६ सागर की। तीन भव १२ देवलोक के २२—२२ सागर के अथवा ३३—३३ सागर के २ भव अनुत्तर विमानों के। मनुष्य भव में अधिक।

५ गु० की स्थिति—५, ६, ७ गुणस्थान की स्थिति जघन्य अन्तमुहूर्त की उत्कृष्ट देशऊणा पूर्व क्रोड की।

७ वें से ११वें गुणस्थान तक की स्थिति—जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त की।

१२ वें गु० की स्थिति—जघन्य उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त की।

१४ गु० की स्थिति—५ लघु अक्षर उच्चारण काल की।

क्रिया

१ गुणस्थान में २४ क्रिया इरियावहि नहीं।

२ , २३ ,, इरिया मिथ्या नहीं।

,, २२ , ,, अव्रति नहीं।

,, २ आरम्भिया मायावत्तिया।

७ से १० तक १ क्रिया मायावत्तिया।

११, १२, १३ में १ क्रिया इरियावहि।

१४ वें गुणस्थान में क्रिया नहीं।